॥ दूतों का अवधपुर पहुँचना ॥

पहुँच अवध उपवन विदेह के धावन सरजु नहाये।
दै चन्दन करिकै रबि वन्दन पहिरे वसन सुहाये ॥
करि कै कुछ भोजन मनमौजन करि बाजिन श्रमदूरी।
सजि सजि पुनि सब चढ़े तुरंगन चले मोद भरिमूरी।
कनक दण्ड बहु रत्न खचित कर लघु लघु लगे पताके।
नाम लिख्यो तिनमहँ विदेह कर सूचक धवन ताके ॥
राजमहल की डगर बतायो पूछत पथिकन पाहीं।
निमि कुल नाथ निशान निहारत पथिक खड़े ह्वै जाहीं

दो०-जा दिन दूत विदेह के, कीन्ह नगर प्रवेश।
दशरथ कौशल्या लखे, ता दिन सगुन अशेश ॥
सकल मातु प्रसन्न भयो मन, उर उपज्यो उत्साह।
जानि परतअस कहन चह,कोउ होत रामकर व्याह

छ०-कौशल्या कैकेयी सुमित्रा औरहु दशरथ रानी।
वाम अंग फरकत निरखै समुझि मिटै मन ग्लानी।
यहि यिधि पूछत जनक चार तहँ गये सभा दरवाजे
जनक नरेश निशान निहारत द्वारपाल छवि छाजे।
यहि विधि करत वसिष्ठ भूपके सभा सुखित संवादा
आये चारी चर मिथिला ते राजद्वार मर्यादा।
दशरथ द्वारपाल देखे तिन छरी विदेह निशानी।
सादर कुशल पूछि मिथिला की बैठारे सनमानी।

तुरत जाय अवधेश सभा महँ ऐसे बचन सुनाये।
धावन चारि पत्र लै आये उन्हे मिथिलेश पठाये।
दूत बचन सुनि अवध भुआला। लग्यो पत्र बाचन तेहि काला
जब बाँच्यो मिथिलेश जुहारा। उभय पाणि पंकज शिर धारा
सकल पत्रिका जब नृप बाँची। जानी राम लषन सुधि साँची।
हर्ष बिबश कछु बोलि न आयो।तनु पुलकाबलि दृग जलछायो
षट मीठी चीठी महँ देखी। मान्यो ईश्वर कृपा विशेषी॥
प्रथम भयो ताड़ुका संहारा। मुनि मख राखि निसाचर मारा
तीजे गौतम नारि उधारा। चौथे जनक नगर पगु धारा॥
पँचयो शंभु चाप कर भंगा। सीता व्याह छठौ रसरंगा॥
ये खत महँ षट लिखी मिठाई। बाँचि भूप रहिगे सुख छाई।
करत बिचार बाल वय थोरी।किहि बिधि किय ऐसीबरजोरी
केहि विधि लाल ताड़ुका मारे। डरे न ताके बदन बगारे॥
द्वादश बर्ष बाल पै सींचा। किमि मारे सुवाहु मारीचा॥

दो०-जानि परै नहिं कौन विधि, तारी शिशु मुनि नारि।
विश्वामित्र प्रभाव यह, और न परै बिचारि॥

खेलत रहे तहाँ सुधि पाई। आए भरतु सहित हित भाई॥
पूछत अति सनेह सकुचाई। तात कहाँ ते पाती आई॥

दो०-कुसल प्रान प्रिय बंधु दोउ, अहहिं कहहु केहि देस।
सुनि सनेह साने बचन, बाची बहुरि नरेस॥

सुनि पाती पुलके दोउ भाता। अधिक सनेह समात न गाता

दो०-तिहि अवसर सानुज भरत, आये करन प्रनाम ।
पत्रीकर लिखि अकथ मुद, पूछत भे मति धाम ।।

प्रभु पत्री कहँ तै यह आई । का हमारे प्रिय बंधु पठाई ।।
शोभा कौन देश कह देही । धन्य नित्य जे दरसन लेही ।।
सुनत सुवानि नेह महँ रांची । क्रमतै बहुरि महिप मनिवांची
पुलके बिबभ्राता तिहि बारा । तन न समाय सनेह अपारा ।।
परखि पुनीत सु प्रीति अथाही । भाइव्रता वह सबन सराही ।।
दो०-कुशल प्रान प्रिय बंधु दोउ, अहहिं कहहु केहि देस ।
सुनि सनेह साने बचना, बाची बहुरि नरेस ।।
सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता । अधिक सनेह समात न गाता ।
प्रीति पुनित भरत कै देखी । सकल सभा सुख लेहेउ विशेषी ।

।। दूत बच्चन श्रीदशरथजी से ।।

कहाँ बसत रघुबर एहि काला । पुरण जज्ञ भयो मुनि पाला ।।
कहउ विदेह चीनै किहि भांता । बिहँसे दुत सुनै यह वाता ।।
कवहि आई इत दरशन देहै । पुर नर नारी सुभाग मनैहै ।।
भो भूपति सिरतन गुसांई । तुम सम धन्य जगत महिमाही ।
राम लखन जिनतनय अदुषन । अमित अतनसामदुत्ति जगभुषन
पुत्र कुमार कि दुरही महिपा । रघुकुल तिलक त्रिपुर के दीपा
जिन कौजश शशी लै अवदाता। रवि लैअधिकप्रताप विख्याता
तिनहि कहिये जाना किमि होई । रबिहि दीप लै देखन कोई ।
जातहि राम ताड़का मारी । तबहि सुरन्ह जय जयति पुकारी

दो०-अस्त्र शस्त्र सब अर्पि मुनि, विद्या रहस बताय ।
सुखसह आश्रम पहुँच के, कीन्ह जज्ञ बनाय ।।

निशिचर दल लै राक्षस आये । राम लखन लै धनुशर धाये ।।
बिनु फरशर रघुपति माँरिचा । दीन्ह उड़ाय सिन्धु के बिचा ।।
अग्नि वाण प्रभुहते सुबाहु । लखन दले सदल प्राण उमाहु ।।
पुनि बिदेह आमंत्रण पाई । कौशिक चले सहित दोउ भाई ।
राम चरण रज पाई प्रसंगा । दिब्य रूप धरी गये पति संगा ।।
मिथिला जाई जवहि नियराने । जनक आइवहु बिधि सनमाने
रामहि देखि बिदेह विदेहा । भये मगन मन सिन्धु सनेहा ।।
सुन्दर सदन दीन्ह वरवासा । जनक सुवन तहँ सेव सुपासा ।।
राम लखन दोउ बन्धु निहारी । भये सुखी मैथिल नर नारी ।।

दो०-शंभु चाप जग विदित जो, महा कराल कठोर ।
देखत रावन वाण बल, दरेउ द्रतहि मुख मोर ।।

तीन लोक महँ जे वत वीरा । सकेउ उठाय न शिव धनु धीरा
तहाँ राम रघुवर सुख धामा । विनश्रम भंजेव चाप अकामा ।
मुदित सिया रघुवरहिं सिधारी । पहिराई जयमाल सुखारी ।।
सुनिरव सरिस पर सुधर आनी । कहि बताय विक्रम कटुवानी
अतुलित बल श्रीरामहि निहारे । निजधनु दै ह्वै दीन सिधारे
तेज निधान बधुवर दोउ । तिनहिल खैलखि परतन कोऊ ।।
वसुधापति सब कंपहि ऐसे । हरिहि विलोकि करीगन जैसे ।।
धन्य धन्य अवधेश भुआरा । राम लखन पायेव सुत सारा ।।

यथा राम परप्रीति लखन की। तेजनी धान लखन प्रति ताकी
लखन अहहि सुलक्षण अयना। वरणि सकै नहि वाणी बयना
दो०-राम लखन सम सुनहु नृप राम लखन जिय जान।
शोक निवारेव नृपति कर, श्याम गौर मतिमान ।।
भनित प्रताप बीर रस भोई। लागि प्रेम कलित प्रिय सोई ।।
देन लगे कुछ मौज सप्रीता। मुंदे श्रुति नहि करहि अनिता ।।
गुरु कहि बात भई अति नीकी। सुकृतन कै सुख संयुत हो नीकी।।
जिमि तटिनी वारिधी कहँ धावै। धर्मवान यहँ तिमि सुखआवै
गौ द्वीज गुरु सेवी तुम ज्ञानी। तैसी कुशल कौसला रानी ।।
तुमसम पुन्यवान नहि जानौ। तीनकाल में दुरलभ मानौ ।।
अमित कामवपु राम सरिसे। कौन पुन्यवर कै सुत दीसे ।।
नीति धर्म गुण सागर चारौ। भुषन करन वीर ब्रत भारौ ।।
रहौं अनामय जुत सब काला। बुद्धिहि पावन वंश बिशाला ।।
सम संबंध दैव निरमयऊ। हम सब कौ सब वांछित दयऊ ।।

।। सतानन्दजी बुलाने राज गये ।।

छ०-दिय खबर धावन तलग गौतम तनय प्रभु इत आवही।
हुलसी सुमति नृप हृदय तिन कहँ अग्र हवै हमल्यावही ।।
वहु मुनि वशिष्ठ वरिष्ठ सुमंत आदि सकल लये।
बहु बाहिनी जुत अवध तै कढ़ि एक योजन लौ गये ।।
सो०-चतुरंगिनी स्मीमान नियरानि शुभ पंथ महँ।
सिबका लगि दिखान सतानन्द जिहि मह यथित।

दो०-मिलै महिप रथ ते उतरी, करी प्रनति वहुबार।
धर्म धीर सुख पाल कौ, लयौ कंध परधार ॥
चीमत तिन सिबिका उतराई। आशिष दै भेटे उरलाई ॥
मिले वशिष्ठादिक रिषि बृन्दन। करी पर सपर पदअभिवंदन
सादर लवाइय चले ह्वै आगै। देखिपुरि मुनि मन अनुरागै ॥
सरयु पुलिन आम अमराई। बनै विविध कुंज अति सुखदाई ॥
तहँ निवास कराव प्रमानी। उतरे तितहु दुत बड़ ज्ञानी ॥
भवन आइ भुपाल सुजाना। पठये शुचि साहित्य सुनाना ॥
पत्र पुष्प फल रितु भव नीके। असन चार विधि तुल्य अमीके।
आसन सयन मनोहर वासा। सेवकाई हित बुध निज दासा।

दो०-समुझि परारध दिवस कौ, पठई सुमंत सनेह।
करि पठई विनती करहि, पावन अब ममगेह।

॥ सतानन्द राजसभा आना ॥

सतानन्द आये तिन साथा। उठे वरासन तै नर नाथा ॥
उत्तम सिंहासन बैठारे। अपने हाथन पाँय पखारे ॥
पुजन करिलुति कीन अपारा। मानौ अपनौ भाग उदारा ॥
सकल संगियन कौसिहि भाँता। किय सतकार सुभग नृपज्ञाता
तब मुनि जनक सुवस्तु पठाई। समय समुझि सौ द्रष्टि कराई
कुँजर तुरंग रथदिक जाना। सहित उपस्कर विविध बिधाना
वस्त्र रतन सज्जित दुतिवंता। रोम पाट पट जाति अनंता ॥
हीरक जलज मणिन कर चीने। भूषण बड़ मोले बहु दीने ॥

दो०।देखन बस्तु सराहिं सब, विपुल बड़प्पन देत ।
पूछी करयुत पंक्ति रथ, कहिये आगमन हेत ।।

।। सतानन्दजी बचन ।।

सतानंद आनँद हिय पागे । राम पराक्रम वरनन लागे ।।
तब सुत राम जनक पनराखा । धनुष भंजि पूरेउ अभिलाषा
भूषित किय सिय लै जयमाला । होने रहेउ ब्याह इहि काला
राजा तुम प्रति विनय बखनी । कृपा करहिं मोपै अनजानी ।।
मंगल काज विलंब न लावै । निज कुमार बिवाहन आवै ।।
कौशिक मोहिं तव निकट पठायो । लै बरात सुखसाजबुलायो
बांधव संबंधी व्यवहारी । देखहिं सब दरसन सुखकारी ।।
सैना सहित सकल रनिवासा।कछु दिन ममपुर करहिंनिवासा
गाधि सुवन सुभ सम्मति पाई । देयँ नृपति नव नगर बसाई ।।
रानिन सहित वास तहँ होऊ । यथा अवध सुख रहै समोऊ।।
इहि विवाह मैं नरतन लाहू । देवै जोग बहुत सब काहू ।।
परिछन नहछू मंगल कारा । करहिं मातु राम कर सारा ।।
दुलह वेष निरखि निज सूना । लहिहैं मातु सुआनंद दूना ।।
कौशिक आय सुसकल सुनाई । नृप कि प्रीति विनय पुनिगाई

।। श्रीदसरथजी वशिष्ठजी ।।

दो०-गुरु तन चितये तिन कहेउ,उचित कहत मुनिनंद ।
सम संबंध त्रिलोक में करत सदहुँ आनंद ।।
गुरु निदेश अब नृपति लहि,मिथिलहिं करे पयान ।
राउर सह मुद जाइहैं, हमहुँ सुनै मतिमान ।।

बहुत भला भयऊ अवधेशा। मंगल मूल तुम्हार निदेशा॥
अहोभाग जोरेउ विधि नाना। चलहिं संग हम साजि बराता
जौं लगि इहाँ रहिय मुनिनाथा। करिय असन करिगेह सनाथा
तब वशिष्ठशुभआयसुदीन्हा। कौशिक बचन चाहियनृपकीन्हा
अन्त:पुर सह चलै बराता। धूमधाम कौतुक मग जाता॥
देखि सबहिं रघुवीर विवाहा। पाय नयन फल भरै उछाहा॥
यह विवाह तब पुन्य प्रमाना। होये नृपति सुनहु दै काना॥
कौशिक मिस नृपबिनहिं प्रयासा। पुण्य बेलि फलफलीप्रकासा
सुनि मुनि बचन माथ महिलाई। रावरि कृपा कहेव नरराई।
अज्ञासिर पर रावरि नाथा। सब प्रकार मैं भयौं सनाथा॥
बहुरी नृपति मन भाव जनाई। पानि जोरि बोले सुखछाई॥
भवन पधारे गौतमी पूता। पावन करि सुख देहि बहूता॥
सतानंद मुनिवर रुख जानी। चलन कहे अतिशय सुखसानी।

श्रीसतानन्दजी को दशरथजी राजमहल में लाना

दो०-बार बार पद वन्दि नृप, कुल गुरु आयसु पाइ।
जनक पुरोधहिं लै चले, रथ चढ़ाय हरषाइ॥

अति उत्साह गयो लै भवना। षोड़स पूजै अतिसुख छवना॥
सब प्रकार सतकारहिं पाई। भवन वशिष्ठ गये द्विजराई॥
गुरु अस सतानन्द श्रुतिधीता। इक आसन बैठे अति नीता॥
वर दुलहिन कौचिर सुखकारी। चन्द्र शुद्ध शुभ लगनविचारी

दो०-मार्ग सिर्ष सित पक्ष की, पाँचै तिथि ससिबार।
उत्तर फालगुनी नखत, सोमन जोग उदार॥

दुषन रहित सभुष्न जानी । निश्चय कियौ दुवै मुनि ज्ञानी ।
पत्र लेखकर सभहि सुनावा । उत्तम कहि सवही सुख पावा ।।
विविध आसियन कलितसुहति। गौंतम तनय लिखी इकपाती ।
लिखौ लगन कौ निम्चय येहु। नेहिन कौ निवतेइमि देहु ।।
हम बरात लै आवहि साथा । दइसु निज दुतन के हाथा ।
ततपर ते संतत निज कामा । गये सपदि करिचरन प्रनामा ।।
वह गुरु लिखित पत्र नृप लीना । रंगे स्वरहि निवेदन कीना ।
विनय करि भोइत हमारो । हुब यह काज समारन वारो ।।
अंतः पुरहि जाय तब भुपा । कौशल्या महल बैठी महिपा ।
कोशल्यादि बोलि सबरानी । सकल रामकी कीर्ति बखानी ।।
सुनि संदेश सकल हरषानी । अपर कथा सब भूप बखानी ।
प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानी । अति आनंद मगन महतारी ।।
लेहिं परस्पर अति प्रियपाती । हृदय लगाइ जुड़ावहिं छातीं ।
रामलखन कै कीरिति करनी । बारहिं बार भूपवर बरनी ।।
मुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाए । रानिन्ह तब महिदेव बोलाये ।
दिए दान आनंद समेता समेता । चले विप्रवर आसिषदेता ।।

दो० जाच कलिए हँ कारि दीन्ह, निछावरि कोटि विधि
चिरंजीवहु सुत चारि, चकवर्ति दशरथ के

कहत चले पहिरे पट नाना । हरषि हने गहगहे निझाना ।
समाचार सब लोग न पाए । लागे घर घर होन व धाए ।।
भुवन चारि दसभरा उछाउ। जनक सुता रघुवीर विआहु ।

सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे। मगगृह गलि सँभार न लागे।
जद्यपि अवध सदैव सोहावनि, राम पुरी मंगल मय जावनि।
तदपि प्रीति कै रीति सुहाई, मंगल रचना रचि वनाई।
ध्वज पताक पट चामर चारु, छावा परम बिचित्र वलारु।
कनककलस तोरन मनि जाला, हरद दुब दधि अक्षत माला।
दो०-मगलमय निज निज भवन, लोगन रचेव नाइ।
बीथि सीची चतुर सम, चौके चारु पुराइ॥
जहँतहँ जुथ मिलि भामिनि,सजिनव सप्तसकल दुतिदामिनि।
विधुवदनिमृग सावक लोचनि,निज सरूप रतिकाम विमोहनि
गावहि मंगल मंजुल बानी। सुनिकलर वकल कंठ लजानी।
जूथभवन्त किमि जइ बखाना।विस्व विमोहन रचेउ विताना।
मंगल द्रब्य मनोहर नाना। राजत बाजत विपुल निसाना।
कतहं विरद बंदी उचारही। कतहु वेद धुनि भुसुर करही।
गावहि सुंदरि मंगल गीता। लै लै नाम राम अरु सीता।
बहुतउछाह भवन अति थोरा। मानहुं उमगि चला चहुओरा।
दो०-सोभा दसरथ भवन की, को कवि वरनै पार।
जहाँ सकल सुर सीस मनी, राम लीन्ह अवतार॥
लगेउहोन उत्सव बहुभांती।छनछन जननि हियहिं हरषाती॥
भली कीन विधि गुरु तिव कहईं।राम ब्याह मंगल बड़लहईं॥
कहतनृपतिपुनिपुनि सुधि भाषी।मुनि प्रसादयहँसबसुरसाखी॥
चलहु जनकपुर राम बराता।साजहुसकल साज अव ताता॥
सहितशत्रुहन विविध प्रकारा।करहु चलन कर सबहिसंभारा॥
सुनि अरिदवन भरत दोउ भाई।कीन्हे सकल रजायसु पाई॥

( श्रीरामजी के विवाह का समाचार पुर वासी को सुनाना )

सो०-सीताराम सुब्याह, फैली चरचा घर घरन ।
छन छन महा उछाह, मगन अवधपुर नारिनर ॥

दो०-तोरन मुक्तावलिन के, चन्द्रावलित समान ।
फल रसाल पल्लव कलित, रतन कलश श्रीमान् ।

घरघर मंगल गावहिं नारी। निजनिजभवन विचित्र सम्हारी॥
तोरन ध्वज पताक फहराई । घर घर चौके मणिन पुराई ॥
नेवते सब संबंधिन जाही। बंधु सनेहिन भूलेहु नाहीं ॥
नीके गृह पुर डगर सभारी । होय विचित्र वितान तैयारी ॥
अरुनधती आई नृप धामा ।पग लागि रानिन कीन्ह प्रणाम॥
आशिष दीन कुशल विवहारा। फूलौ सुकृत लहवफल भारा॥
राजभवन किमि जायबखाना। सत सुरेश गृह लखत लजाना।
नगर नारि करिकरि शृंगारा। राजभवन गमनहिं सुख सारा ।
राममातु सुख सकहिं न गाई। छनछन नव आनँद अधिकाई॥
ब्याह गीत गावहिं दिनराती। होहिं सुखी पुलकित मनछाती॥
सीयराम शुभ ब्याह सुहावा। त्रिभुवन विदित सुमंगल गावा॥

दो०-लै लै जहँ तहँ नवल नागरी, सिय रघुनंदन नाम।
गावहिं मोद भरी मधुर, वनरा अति सुख धाम ॥

( पुर नारी आपस में बातें )

कहहिं परस्पर प्रेमहिं सानी । जाहिं बरात धन्यते प्रानी ॥
लखैं जनकपुर की सुख सोई ।जेहिविवाह की विधिसबहोई॥
एक कहैं हम यहि सुधिपाई । जैहैं नृप रनिवास लिवाई ॥

कौनो सुकृत जोग सँग जाही। वह सुख हम कहँ दुरलभ नाहीं
विनती कौशल्या प्रति कीवी। लवाइ चलहिं तौ बड़ सुखलीवी
नेबते बंधु आवे बर जेते। हठ करिकै देखव हम तेते॥
ऐसे मृग नैनी सुकुमारै। नित्य मनोरथ विपुल विचारै॥
दो०-सकल दिसन ते विप्र रिषि, बंधुक भूप समाज।
आवै आमंत्रण करै, राम ब्याह शुभ काज॥
करहिं शत्रुहन तिन सत्कारा। पठवहिं विविध वस्तु सँभारा॥
देखिये अस औसर बड़भागी। सबको सबहुँ मिलै बिन माँगीं।
सांता जुत नृप नेह बिचारी। रिष्य शृंग आये तप चारी॥
कश्यप गर्ग मरीच प्रधाना। सौनक सनकादिक मतिवाना॥
भरद्वाज जवालि पुनीता। चिमन अंगीरा जिन सुभगीता॥
बहु ब्रह्मर्षि राजरिषि ज्ञानी। आये राम विवाह भवानी॥
छ०-नृप लोम पाद मगाधि पति प्राचीन मित्र महीप कौ।
आये कुटुम्ब समेत देखन ब्याह रघुकुल दीप कौ॥
रानी कौशल्या के तात ख्यात जु भानुमंत सुखी हिये।
आये सुपुत्रन पुत्रि वधुवन सहित बहु परिजन लिये॥
सो०-मगध देश भुवपाल, विदित सुमित्रा के जनक।
वामदेव सु विशाल, आये ते इमि सुतन जुत॥
काश्मीर भूपाल, अश्वपती कैकइ पिता।
कुँवर युधाजित आदि, आये अतुल प्रताप बल॥
साढ़े तीन सतक प्रभु केरे। मान पक्ष के भूप बड़ेरे॥

सजि सजि निज चतुरंगिनि नाना । आये करन बरात सुजाना
विश्रुत वीर सिंह कौशारा । कम्बू देश अधीश उदारा ।।
नाम सुरतन सैन रनधीरा । आये सुभग सजे बड़ बीरा ।।
संबंधी रघुकुल के जेते । आये अवधपुरी कहँ तेते ।।
अगनित बंधु व राजकुमारा । नाम कहत हैं बड़ विस्तारा ।।
अपसरान्हि किन्नर गंधर्वा । मुझझक रुप बनाये सर्वा ।।
महिपालन के धरे सरीरा । आये सब दिगपाल अधीरा ।।
नरतन भूप बड़े सम साजा । सुरन समेत आव सुरराजा ।।
प्रीति जनावन समय बिचारी । ल्यावा अमर विभूति सुभारी
आव मंजु घोषादिक रंभा । नृत्य गान में निपुन सदंभा ।।
विश्वावसु जु विश्व महँ नामी । बहु गंधर्वन कौ बहु स्वामी ।
नारद लीन्हे कर वर वीना । पहुँचे राम गुनन मन लीना ।।

दो०-विद्याधर पुनि सिद्ध वर, चारन खग नग नाग ।
आये चलन वरात सँग, सकल सराहत भाग ।।

आव निषाद अधिप गुह नामा । लीने पंचायुध भटग्रामा ।।
राजन के नहिं ब्याह निहारे । देखन सो बड़ भाग हमारे ।।
बाल सखा सुवलादि सुपासी । सहज मनोहर रुप उपासी ।।
फुले फिरहिं कहा मनमाहीं । अब हम रामचन्द्र पहँ जाहीं ।।
लेवाइ गये जब ते रिषिराई । तब ते युगल नयन अकुलाई ।।
नित जेवनार राज गृह होई । बरनि सकहिं को रुचिर रसोई
तिन पंतगन बैठि जे जेवहीं । सुनि अमृत की उपमा देवहीं ।।

अगनित अन्नन के सुप्रकाशा । गुन करना संधान अपारा ॥

॥ श्रीवशिष्ठजी आना अन्तहपुर में ॥

सो०-अन्तःपुर महँ आय, नृप सौं कहेउ वशिष्ठ मुनि ।
करहु बरात पयान, पंथन दूर विदेह को ॥
दो०-जहँ वर दुलहिन करहिंगे, तेलादिक सब नेग ।
दश दिन में पहुँचब उहाँ, ताते चलिय सवेग ॥

दीजै चलन सकल रनिवासा । देखहिं राम विवाह बिलासा ।
भलेहि नाथ कहि नृप सज्ञाना । बजवाये गह गहे निसाना ॥
जिनको डीलन चलिय चलाये । तिनकौ सुबुध आप ह्वै आये
पठइ सचिव पुर में प्रति गेहा । सबको मान दयौ करि नेहा
अगिन्ति छबि सौं अगनित जाती ।जहँतहँ ते कढि चलेवराती
जुग जुग पदचर जुत असवारा । सबहिं चले सूराज दुवारा ॥
चतुरंगनि सजि के सब आई । हेरहिं कौशल राज अवाई ॥
भीर सम्हार कौन पै होई । वाटनीठ करि पावहिं कोई ॥

॥ बारात सजना मंत्री भरतजी शत्रुहनलालजी ॥

छ०-भरत शत्रु सूदन सुमंत को कह्यो बोलाय नरेशा ।
सेन चलावहु जौन भाँति हम प्रथमहिं दियो निदेशा ॥
करि अभिवंदन दिगस्यन्दन पद तीनहुँ गये तुरंता ।
रिपुहन हय गन भरत नागगण रथगण सजे सुमंता ॥
चली बरात अवधपुर ते तब करि दुन्दुभी धुकारे ।
नौबत झरत चली नागन महँ रबकर नाल अपारे ॥

सकल अवधपुर नारि मनोहर गावहिं मंगल गीता।
दूलह दशरथ लाल राम दुलहिन वैदेही सीता ।।
छैल छबीले राजकुंवर सब शत्रु शाल के संगा।
छण छण छिति महँ नचत नचावहिं चंचल चारुतुरंगा
मुकुट कनक कुंडल हिय हारन पीत पोशाक सँवारे।
पटुका पाग छोर छहरे क्षिति झरै मुकुत जनु तारे ।।
कहुँ धवावै कहूँ कुदावै बाजिन राज कुमारा।
झमकावैं असि कला दिखावैं रिपुहन पाय इशारा ।।
चमकावैं नेजा अति नेजा मेजा कहूँ मिलामै।
रेजा रेजा किये करेजा जिन शत्रुन संग्रामै ।।
बजै निशान बृन्द बृन्दन महँ फहरै वृन्द निशाना।
राजकुँवर देवनसम सोहत रिपुहनजनु मघवाना ।।
नवयौवन की असित अरुणिमा तिमि वीरी मुखलाली।
गोरे बदन सदन शोभाजनु उदित अमित उड़ माली ।।
दो०-छरे छबीले छपल सब, क्षण क्षण सुछबि अछाम।
क्षिति नायक के छोहरिन, छूटति छूट ललाम ।।

।। बारात के चलने के क्रमशः चलना ।।

छं०--बाजी मंडल के पीछे पुनि मंडल चल्यो गयंदा।
मनहुँ पवन पुरवाई पावन उदय श्यामघन बृन्दा।
तुंग वितुंड सुंड फटकारत सांकार लिये पुरटकी।
मनहुँ श्यामघन मंडल में छवि छण छण में छणकी।

जड़ित जवाहिर हौंद हम के लसै अमित अंवारी।
मनहुँ विंध्य मंदर शृंगारमें सुर मँदिर छबि कारी॥
रघुवंशी सोहत असि ध्वसी सिंधुर सजे सवारा।
औरहुँ भूरि भूमि के भूपति केते राजकुमारा॥

॥ बराती को सवारी पर चलना॥

मन्द मन्द सब चलत पंथ महँ हसँत बतात बराती।
एक एक सब लोकपाल समराजत राज सजाती॥
शत्रुजय गजेन्द्र गज मंडल मधि में भ्राजत भारी।
राजकुमार सवार भरत तिहि राजत जनमन हारी।
गज मंडल के पाछे सोहत रथ मंडल नहि दूरे॥
वर्ण वर्ण वाजिन की राजी सजी रही मगरुरे॥
सुभट सुर सारदा सभ्यजन सज्जन सुकवि सुजाना।
चढ़े सकल स्पंदन गवनत पंथ भूषण भूषित नाना॥
पुनि रनधीर भीर पैदल की सायुध चले अपारा।
चमकहिं तेग अनी कुन्तल की सिंधु तरंग अकारा॥
रथ मंडल पीछे पुनि सोहत परिकर भूपति केरो।
कनक दंडकर जड़ित हजारन रत्नन होत उजेरो॥
हाटक के घोटे सोटे कर पंचानन आनन के।
धरे कंध सोहत अति सुँदर अवध जनन ज्वानन के॥
सोहत वल्लम विविध प्रकारन छरी हजारन हाथा।
पीतवर्ण पहिरे पट भूषण चले जात प्रभु साथा॥

जो सेवक कौशल नरेश के गवने राम बराता ।
कड़े करन कठुला कंठन में कुँडल कान सुहाता ।।
युग स्पंदन सवार सोहत्त तहँ ढिग स्पंदन मुनिराई।
मनहुँ देवनायक संग सोहत वाचस्पति सुखछाई ।।
चारुँ चमर चहुँ ओर विराजै छत्र छपाकर छाजै।
अंशुमान इव आत्रपत्र युग विशदविजन बहु भ्राजै।
विविध किताके परम प्रभा के फहरै बिपुल पताके ।
जिन ताके छाके सुरमानस अरुझाते रविचाके ।
कौशल पति पीछे पुनि गवनत राजत राजनिबादा।
लीन्हे भीर निषाद भटन की हय चढ़ि बिगत विषादा ।
यहि विधि चली बरात जनकपुर अवधनगर ते भारी ।
कुशल कहहिं लखि राम लखन को पूजी आश हमारी ।
रथगज बाजि सुसाज अनेका । बेखत भूलत विरति विवेका ।।
अमित जान साजे सुखकारी । नर पालहु बहु भये तयारी ।।
शुभ मुहूँत कुल गुरु तब देखे । आय सुकिये मुदित मन लेखे ।।
राम बरात चलै अब भाई । सुनतहिं सुभग निसान बजाई ।।
वेदमंत्र मुनि वरन उचारे । पठहिं शांति सब होत सुखारे ।।
बंदि विरद भाट अरु सूता । कहहिं मोद भरि प्रेम प्रसूता ।।
मंगल गान दशहुँ दिशि धावा । जय जय गूँजेव शब्द सुहावा ।
राजद्वार भई भीर अपारा । गगन भरेउ खरज चहुँ द्वारा ।।
दो०-चढ़ि चढ़ि चले लोग सब, सरि सरयू शुचि पार ।
वन प्रमोद लागे जुरन, अगनित अश्व सवार ।।

अमित भार भरि साज समाना। बृषभ शकट खच्चर उरयाना
चले कहारहु को गनिपारा। भरि भरि कामर वस्तु अपारा ॥
सेनापति सह सेन सुजाना। चार भाँति धरि आयुध नाना ॥
चले वीर बर बिरदहिं बांधे। सोहत चाप वाम कर कांधे।
हयगय रथहिं चढ़ेबहु सोहैं। सुरपति सेन जिनहिं लखि मोहैं ॥
पीछे चले विप्रवर बृन्दा। सुभग जान सब चढ़े स्वछन्दा ॥
श्याम करण हयअगणित साजी। मणिगण भूषित जीनविराजी
भरत सहित वहु राजकुमारा। तिन्ह चढ़ि चले धनुषकरधारा
तिन पीछे सजि राम सुमाता। ले रनिवास हृदय हरषाता ॥
रत्न पालाकी दिव्य मनोहर। हरषि चलीं सुमिरि गंगधर ॥

दो०-रौसन सोंठाढ़े सुभग, भये हयन असवार।
औरै बिपुल मतंग की, रावरि भरि छविसार ॥

छ०-बाजन अनेकन बाजहीं दश दिशन छाय अवाज।
तुंवरु ढोलहुँ ढक्क डिडिमि पणव परह दराज ॥
मंजीर सुरज उपंग वेणु मृदंग सलिल तरंग।
बाजत्त विशालक हाल त्यों करताल तालन संग ॥
झल्लरि सरासर झाँस साँस सुहावनी सनकार।
रहि पूरि धुनि शंखन अंशख्यन सौन वारापार ॥

सुँदर सोभन राज सिरीके। वह साहित्य विमोहन हीके ॥
चौसठ लक्ष घरु वर वाजी। सर्व स्वर्णमणि भूषण साजी ॥
शुभ लक्षण युत अगनित जाता। निदरहिं खगपतिको मगजाता

चले बहुत कोतल तिन माहीं। पायँ पैजनी झमकत जाहीं ।।
कलँगी झुकहिं सूदि पतिवारी।नचवत जाहि सुखचि करियारी
ढोरहिं पुच्छ मरोरहिं अंगा । करहिं नृत्य गति चरण सुरंगा।
जगमग होवहिं जीन जराऊ। गुंफित चरनन चौर लदाऊ ।।
चार चार सेवक इक पासा। तन मन सों सेवहिं सुहलासा ।।
दो०-बहुतन क्षत्री अतन से, राजकुमार प्रवीन।
नाना मणि भूषण धरै, भये मुदित आसीन ।।
पहिरे कवच तून कटि बाँधे। धृत असि चर्म धरे द्यतु काँधे ।।
स्वर्न सरीसे दिपहिं सरीरा। लसै वीर विरदन रनधीरा ।।
जहँ कछु साव कास मग हेरहिं। दक्षिण वाम चक्रको फेरहिं।
करहिं प्रशंसा देखहिं जोई। जाहिं चले पुर वाहिर सोई ।।
तिमि दस लक्ष गयंद दतारे। सजे धारुड़ी लावत भारे ।।
गुंजत भ्रमर कपोलन पाहीं। बड़े सुरन घंटा ठहनाहीं ।।
झूलै भुवि परसीह तिन केरी। सिरी विविध कुभन पर हेरी ।।
छ०-झेला सुरत्न के नितँवन, रत्नमय जाली डरी।
एकन अमारिन वनक बहु एक सूसंभारी धरी ।।
वाजिन सुजीन नवीन वाजिन वज्र की वर पाँवरे।
किये चित्र रंग अनेक फेरहिं सुंड दंडन साँकरे ।।
सो०-लक्षण रथ अभिराम, सहित उपस्कर सुभग आती।
होते हय श्रुति श्याम, जोते तिन कहँ सारथिन ।।
दो०-झंझनदार व किंकिनी, होत पंथ मह जात।
महारथीतिन में लसै, धनु विद्यामह ख्यात ।।

बहुसिविकादि सुखासन नाना । कहतन बनहि बनक अभिधाना
सुन्दर श्रीमूरति कहँ लीनै । विप्र मुनीश्वर आसन कीनै ।।
जनुश्रु ति छंद आहिं तनुधारी । चले राम को ब्याह विचारी।।
कोटिन पदचरी चले छबिवंता । लीहै निज रुचि अस्त्र अनंता
पट भूषण पहिरे मन भाये । जात बृन्द के बृन्द सुहाये ।।
सकल राजसुत सहित ललामा । चलै अग्र कहि सकियन नामा
चले बहुत बाजार विसाला । सकल वस्तु पाइय सब काला
लिय अमित आखेट समाजा । गवने ग्रह भीलन को राजा ।।
राखन जोग भोगपुर माहीं । जेजे पटु पातनि अवगाहीं ।।
कुल की कुल जेठी कुलवारी । वर विवाह विधि जाननवारी ।
मुनि वशिष्ठ आये रथमाही । लीन्हे होम हुतासन जाही ।।
अरुणधती आदिक द्विज वामा । बैठी सिविकन मैं अभिरामा ।
चली विपुलकुलकी सहचारिन । दासी अमित उचितअसवारिन
कौसल्या को विरद अमंदा । बोलत चले वेत्रधर बृन्दा ।।
न्यौतारी राजन कटकाई । टोइ भर भस अग्र चलाई ।।
छोरि अवधपति संगे काजै । रहिगे बिसद छत सिरताजै ।।
इक रथ सुभंग दुतिया नहिं जातै । रुचिर जासु उच्च श्रवाते ।
सजि सुमंत ताकहँढिग ल्यावा । कहि जय जीव चरणसिरनाषा
हरि गुरु गौरी गनेश मनाई । चढ़त भये दशरथ हरषाई ।।
आनिजान भूपन सिर नाये । जथा उचित सिंधुरन चढ़ाये ।।
बोले वेतपानी बहु ठाढ़ी । छत्रा बलिनि महाछबि बाढ़ी ।।
चले ढुरत चामर दुहुँ ओरा । बजे अनेकन दुंदुभि घोरा ।।

॥ श्री चक्रवती जी को चलना ॥

डंका धौसन परे घनेरे । चले केत रथ हाथिन केरे ॥
बंशी शंख श्रृंग शहनाई । गोमुख टक्कन की छबि छाई ॥
डिमडिम धुधुरिका बहु बीना। मुरज मृदंगन रव रंगीना ॥
इनहिं आदि वाजन बहु बाजै । जिनके नाम न जानहिं बाजे ।
तजी लाज सबहूँ कुल नारिन । चढ़ी धाय प्रासाद अटारिन ॥
लावा सुमन वृन्द बरखाई । देखहिं इकटक भूप जनाई ॥
भरत, शत्रुधन को पहिचानी । आपुस मे भाषहि मृदुवानी ।
होते दूलह येजु कुमाँरा । अति नीके लगते यहिवारा ॥
इनके सव औसर इक साथा । कीने परम चतुर नरनाया ॥
एकहिं संग ह्वै जाति विवाहू। यातै और कौन बड़ लाहू ॥
विधि अनुकूल हमें इक भावै।होइ सकल जो चित अभिलावै।
विचविचगायक वन्दि बजनियाँ। चलेकरतनिजकार्य निपुनियाँ
नट नर्तन अरु भाट विदूषक । चले करत शुभ स्वांग अदूषक
पृष्ट भाग रक्षक रहेते । कछुक साथ चल सेन समेते ॥
छं०-गावहिं विवाह वधावनी अति अग्र निज महँ भारती ।
करि वारि मणि भूषण बिविध अलिगत उतारहि आरती ।
कहि जात नहिं यहि मोद भर बारात के जो सँग गयौ ॥
तिहि समय निरवधि में लह्यो अनुभूत वह मंगल भयौ ।
दो०-चले हरषि दशरथ नृपति, लै वरात निमि धाम ।
जनु सुरेश सव सुरन लै, जात सोह सहकाम ॥

॥ श्रीसरजू तीर बराती निवास ॥

छ०-विविध के ताके परम प्रभा के फहरैं वितुल पतके।
जिन ताके छाके सुरमानस अरुझाते रवि चाके॥
जन काढ़ि कौशल नगर ते मैदान माहि बरात।
तब भयो देवन भोर मनु चहुँ सिंधु द्वितिय दिखात॥
मस्क गज चलत सुहाये, नख सिख भूषित भ्राजे।
टप्प टप्प हय चलत सुनाचत छन छन भूषण बाजे॥
घर घर शब्द करत रथ जाते श्याम करन हय जोते।
फहरत जगत पताका शोभित मनहुँ भूपयश ब्रोते॥
कैयक राजा दशरथ पीछे चलहिं मोदमन छाई।
मनहुँ विष्णु के पीछे राजत सकल सुरन समुदाई॥
जय जय शब्द गगन मधि गूजे बजत दुन्दुभी भारी।
बरषहिं सुमन देव सब ऊपर नचै विमान नबहु नारी॥
मधि बरात बाजत बहु बाजै शंख भेरि सहनाई॥
ढोल मृदंग झाँझ घड़ियाला डफ वेणू सुरगाई॥
दै धुधकार बजत धुधकारी वाद्य अनेकन सोहैं।
शाँति पाठ भूसुर सब उचरत समरीति मन मोहैं॥

॥ श्रीसरयू पुलिन पर प्रथम निवास ॥

सो०-चलिकै कौशल राज, प्रथम दिवस सरयू पुलिन।
मेले सहित समाज, आरामन पट मंदिरन॥
यहि विधि चली बरात, रघुपति ब्याहन जनकपुर
सरजूतट नियरात, भूपति कह्यो सुमंत सो॥

छं०-अब आज अधिक म जात बनत मुकाम सरयूतीर ।
यह पहिल वास सुपास सब कहँ जाइ जुर सबभीर ॥
तुम जाहु सैना वास कर वावहु सुपास समेत ।
हम चलन पाछे गुरू सहित जहँ शिविर सरिस निकेत

श्रीचक्रवर्तीजी श्रीवशिष्ठजीको शुभ शकुन देखाना

देखहु शकुन सब होत सुँदर शुभ जनावत जात ।
दिसि बाम चारा नीलकंठ विहंग लेत दिखात ॥
दो०-भयें सगुन सुन्दर सकल, अभिमत फलके मौन ।
जनु श्रीराम विवाह में, आये साँचे होन ॥
विविध बयारी वही सुखकारी । मिलि सुपुत्र सुहागिन नारी ।
धेनु वत्स को प्यावत छीरा । देवहिं चाक वामदिसि चीरा ॥
दाहिन तन मृगभाल दिखानी । धेम करी बोलहिं बरबानी ॥
सेत सुमन सर्षप दधि देखा । पूरन कुंभ मीन पल देखा ॥
द्विजद्वै पुस्तक धृत मग आये । खंजन कंजन में थितपाये ॥
भयौ नकुल दरसन अभिरामा । दृष्टि परी सुभ तरुपर श्यामा
उड़त दाहिनों नील निहारा । दाहिन काग सुखेत मझारा ॥
दो०-प्रगटे जिनके सगुन वपु, परम ब्रह्म श्रीराम ।
शिव श्रेयकारी सदा, तिनहिं सगुन सब ठाम ॥
डेरा सुमंत दिवाय सबको सहित सुथल सुपास ।
भोजन सकल पहुँचाय सबकहँ जाय जाय निवास ।
उज्जवालि लाखन दीपक निज नयन सब कहँ देखि
आये महीपति मणि निकट विनती करी सुख लेखि

दो०-महाराज सबको भयो, सरयूतीर सुपास।
नाथ पधारो शिविर कहँ, कीजे रैन निवास ॥

॥ श्रीदशरथजी के निवास ॥

छ०-सुनि सचिव बचन अनंददायक सहित गुरु महिपाल।
करिभ रथ भरतानुजहि आगे गयो शिविर विशाल ॥
सब सैन्य डेरा परे सरयूतीर तीरहिं भीर।
युग योजन हिलौं संधि नहिं करि जाय मारीतीर।
बाजे नृपति के दुन्दुभी द्रुत कूच सूचक भोर।
लागे वदन बंदी विबिध विरुदाबली नृप सोर ॥
सब प्रात कृत्य निवाहि मज्जन कियो सज्जन संग।
लहि काल संध्योपासनादिक गुनी सुमिरत रंग ॥
दै दान याचक गणन वित्त विशेषि सहित उमाह।
उठि पहिरि भूषण वसन मन में चलन कीभै चाह।

॥ वरात चलना ॥

आगे को सैन्या चलवाई। चलत यथा क्रम सों छवि छाई ॥
अपुन वशिष्ठ चले इक साथा। बैठे रथन कहत वर गाथा ॥
दोऊ तेज पुज श्री माना। लागे गुरु सुरपाल समाना ॥
फूले अमर विलोकत जाहीं। नमते सुमन बृन्द वरषाहीं ॥
हींषहि हयन बोलहिं गजरूरे। चहुँ दिसि घंटन के खपूरे ॥
कौतुक करत विदूषक जावैं। गाय स्वाँगवर सवन हँसावैं ॥
दिवके दुन्दुभि बजिस बिसाला। मंगल गान करहिं सुरबाल

॥ श्रीजनकजी के मंत्री की प्रार्थना ॥

छ०-तिहि काल सचिव विदेह के, कीन्हो सुबंदन जाय ।
कहि वचन रचन विशेषि विनती दियो नृपति सुनाय ।
अवधेश हमहिं निदेश अस मिथिलेश दीन बुलाय ॥
जबते चलहिं कौशल नगरते कौशलेश लवाय ॥
तब ते सुभोजन पान सामग्री सबहिं दियौ तुम जाय ।
जो लगे खर्च बरात को सो लिह्यो सकल उठाय ॥
लघु मनुजहुँ को संचकि यहँ विसंच रंचन होय ।
अब होइ हमरे शीश शासन नाथ तुम सम दोय ॥
सुनि सचिव वचन विचारि नृप विदेह को व्यवहार ।
मिथिलेश केर निदेश जसतस हमहुँ को स्वीकार ॥
अश कहि वशिष्ठ चढ़ाय स्यन्दन चढ़ो स्यन्दन आप ।
बाजत भये तेहि समय बाजन विविध सुरन कलाप ।
पूरब कियो जिहि भाँति वर्णन तौनि रीति बरात ॥
गवनिससु मिथिला पंथ गहि करि धूरि धुंध अघात ।
सर नदी नारे परत जे गग रहे जल भरि पूरि ॥
आगे चलत ते लहत जल पाछे चलत ते धूरि ॥
पाषण परहिं जे पंथ महँ ते होत रेणु समान ॥
दोय कोश को विस्तार भरति बरात करत पयान ॥

दो०-जहँते चली बरात मग, जहँ पुनि रह्यो निवास ।
तहँलौं हय गय रथ मनुज, भरे चलत सहुलास ॥

नंदिन सेतु रचना युत जोई । औघट घाट रहे नहिं कोई ॥
जहँ निवास लायक थल जाना । तहाँ भूमि समकीन सुजाना ।
धाम दोय जोजन लगि ठामे । परम बिचित्र जाहि नहिं गाये ।
गज हय स्यन्दन हित शुभशाला ।बसन सुखा सन गेह विशाला
नृप निवास हित अति श्रीमाना । विविध हर्म प्रसाद विताना
नाना विधि तरु श्रेनिन माही । समृद्ध वारिद सहस दिखाही ।
वंदन मालन सो द्युति जागे । दर्पण रतन रचित वहु लागे ॥
आयन मोद अमित्त तहँ सोहैं । दिब्य गंध लीपित मन मोहैं ॥
छत्र चमरब्यनादिक नीके । धरे उपकर्णहिं राज श्री के ॥
बर परयंक बिछे जहँ ताहीं । दुग्ध केन सम सयन लखाहीं ।
तनै दंतधावन संभारु । दंत रंग ढंग करन प्रकारू ॥
बड़े बड़े हंडा अरु झारी । गंगालैं नादैं अति भारी ॥
चौकी रतनमय छबि नाना । लसै हंसती सुचप्रति थाना ॥
दो०-तूल कलित सुचि तलप पर, लघु दीरघ उपधान ।
धरे विविध भूषण बसन, कहुँ पादुका पदत्रान ॥
वस्तू देह निवाहक जेती । पहुँचे सुलभ होइ सन तेती ॥
अयन अंत करिये किमि लेखा। समय समय पर सुखद विशेषा
रक्षण सेवन में सुप्रवीने । बैठे सुरनर विग्रह कीने ॥
दूजे दिन जब भइ समिलाना । सकल बरातिन संभ्रम माना ।
विस्मय युत दशरथ महिपाला । गुरु प्रति बूझत भे तिहिकाला
कहिय नाथ यहि पुर को नामा ।अति रमनीक लसत सबधामा
सब बस्तू सम्पन्न निहारी । कबहुँ न हम यह दीख अगारी ।

बास उचित इत भाँति भलेहीं। पुरवासी बड़ आदर देहीं ।।

छ०-बड़ देहिं आदर बाहिरे ह्वै अपनु भीतर राखहीं।
चित शुद्ध सुँदर अमृती समवानी मनोहर भावहीं ।।
करि इष्ट ध्यान वशिष्ठ मुनि करतब्य सव जानतभये
सब भाँति राजा जनक को सामर्थ भल मानत भये।

दो०-सुनि गुरु वचन प्रसंसि उनहूँ विधि नृपसज्ञान।
धन्य जनक भूपाल मणि, जोग इनके प्रगटान ।।

।। श्रीदशरथजी समाज सहित निवास ।।

स्वच्छ सुभग दासी अरु दासा। पहुँचे तहँ सवहीं के पासा।
विनय करहिं कर जोरि सुजाना। हम हैं जनक अनुगयहिथाना
दियौ अधिक श्रंम तुमहिं बुलाई। पठये अखिल करनसिवकाई
नित के सेविन सो कहि लेहीं। करन देहु सब टहल हमैंहीं ।।
रोजहु परिचर्जहिं अव गाहू। भाई आज इहाँ सुसताहू ।।
वाजि गयंद ऊँट पशुजाला। बाँधहिं उचित जिनहिं जससाला
सब सुखपाल सुखासन भाये। नीके लैकरि यतन धराये ।।
जुत प्रमान आसन बैठारे। तप्त उदक सो पाँय पखारे ।।

दो०-उज्जवल छत्र लगावहीं, चामर ढोरहिं कोइ।
रुचि रुचि बीरा सिद्धकर, देत अदब सौं सोइ ।।

नाना ब्यंजन थार सजाई। ले आवहिं भोजन कहँ कोई ।।
बड़ेआदरनसहित जिमावहिं।मिष्ट सुधा सम सलिलपिवावहिं
साजत सेजन एक सुजाना। बृहद बिछावव रचत समाना ।।
इक साहित्य जथा श्रमधारी। सभा सदन की करत तैयारी ।।

नृत्य करै कहुँ अग्र धृताँची । रिझवत करतब करि बिस्वाची।
निपुन नाग दंत धरि वीना । राग निकासत अति रंगीना ।।
दो०-औरों उत्तम उरवसी, निज गुण प्रगटहि आन ।
किन्नर अप्सरा गन्धर्व, बजत नचत कर गान ।।
देखि अद्भुत कौतूहल साजा । मोद लहे सब राज समाजा ।
ऐसे रनिवासहि गण रासी । करहि प्रसन्न टहल करि दासी ।
राम बरात करन जे आये । गृहते अधिक अधिक सुख पाये ।
अपर जात बहु बिधि सनमाने । जे सुख निज सपनै नहिं जाने ।
अगनित वार वधू तन गोरी । सुंदर छबि की नित्य किशोरी ।
दुर्लभ परजंकन पौढ़ाई । पाय पलोटहिं नेह बढ़ाई ।।
दो०-नाना द्रव्य सुगन्ध की चर्चित करहिं शरीर ।
रुचि रुचि सों सेवा करै, हरै अतन की पीर ।।
रहौ नाहिं तिहिठां अस कोई। मन वांछित सुख जाहिं न होई।
जात बरातहिं तिरहुत देसा । किय निवास जहँ जहँ अवधेधा।
तहँ तहँ इमि नव ह्वै सतकारा । बरनत ताहि होत विस्तारा
असन सयन वर बसन सुहाये । पावहिं सब निज निजमनभाये
नित नूतन सुखलखि अनुकूले । सकल बरातीन्ह मंदिर भूले
छ०-सब करहि जनक बखान पंथ महान लखि सनमान को ।
सबको भयो असमान कीन पयान निजहिं मकान को ।।
संध्या उपासन कियो साँझहि गंडकी तट जायके ।
बैठे बहुरि अवधेश आलै सभा सुखद लगायके ।।
आये अनेकन राज राजकुकार नृप दरबार में ।

सबकहत कोउन विदेहसम नृप भयो यहिसंसारमें।।
वर ज्ञान मान विरागमान सुजान वृंद प्रधान है ।
पायौ नरेन्द्र समान समधी सत्य यह अनुमान है ।।
पुनिकह्यो सचिव सुमंत काल्हि कहँआराममुकामहैं।
नृपकह्यौ जतँजतँ जनक सेवक कहतिहँ विश्रामहैं।।

( दूतों का समाचार कहना )

उतै दूत जे गये अवधपुर लै विदेह की पाती ।
जोरि पाणि कीन्हे पदवंदन आय तीसरी राती ।
दूत:विलोकि विपेह विनोदित कहे कुशल सबआये।
कहहुकुशल कौशलभुआल की कब ऐहैंसुखध्याये।।
दूतन कही खबरि तहँ कीसब नृपरनिवास उताऊ।
प्रीतिरीति पुनि लै बरातको वरण्योचलनित्वराऊ।।
पुहुमीपति यहि पुरहिंपहुँचि हैं दसयें सहितबराता।
कही प्रणाम आपको बहु विधि दशरथ विश्वविख्याता।।

( दशरथजी-बराती-नगर को चलना )

इतै बरात चली रघुकुल की राम दरस अभिलाषी ।
लषणराम को लखन लान्हि हम चले परस्पर भाषी।।
धांम-धाय देशन के बासी देखत आय बराता ।
पूछत प्रथमहिं रामलखन को पिता कौन विख्याता ।।
जाके पूत-सपूत बाँकुरे तासु दरश सुखकारी ।
तृनसो जिन त्रिपुरारि धनुषदलिब्याहत जनकदुलारी।।
मिथिला देशप्रदेश कियो नृप संग बरात लै भारी ।

तबते हँसिहँसि हुलसि हुलासि जन देत माधुरी गारी।।
अतिहिं त्वरा गति से बराततब गरजब सुरसरितीरा।
तहँते जनक नगर त्रय योजनजामब सचिवतहँ धीरा।।
जोरिपानि बोल्यो सुमंत सो इत सब भाँति सुपासा।
अब मिथिलापुर है त्रय योजन करै बरात निवासा।।

सो०-लेत मोद मन मान, येही विधि दसये दिवस।
दशरथ गौतम थान, पहुँचे सुरसरि के पुलिन।।

दो०-प्रात मंजन करि अवधपति बिये पूजन स विधान।
उचित यथा विधि प्रीति सों,दियो द्विजनकहँदान।।

छ०-सकल बरात निवास कियो तहँ सबकी भई समाई।
असनवसन पवनादिक की तहँ प्रगटी पूरणताई।।
मिथिलाधिपके परिकर सिगरे अस कीन्ह्योब्यहारा।
मोदितमहां अयोध्याबासी अवध विलास बिसारा।।

छ०-सबै बराती सुखी सकल विधि रंच विसंच न पाये।
धावन आये धरनि पती को विस्तर वचन सुनाये।।

**( मंत्री से बारात )**

कौशल पाल तुरंत सुमंतहि बोलि कही अस वानी।
सजवावहुँ वरात आजहिंते कालिह होत अगवानी।।
सचिवकालिह मिथिलाधिराजको मिलिमुनिराजसमेत।
सानुज कौशल्या नन्दन लखि मिटी विरह दुख जेता।।

**( श्री मिथिला जी बारात आने के सुनना )**

दो०-मिथिलापुर हल्ला पर्यो, ऐहैं आजु बरात।

अगवानी हित जनक नृप, साजि सैन विख्यात ।।

भई खबर मिथिलापुर माहीं । आइ बरात देव सरि पाही ।।
आतुर मंत्रि खबर अस पाई । सजे अपुन सैना सजवाई ।।
जनक तनय लक्ष्मीनिधि नामा। सज्जित भये रूप अभिरामा।।

॥ अगवानी सजके चलना ॥

धर्मधीर पुनि भयो तयारा । जो विश्रुत 'कुशकेतु' कुमारा ।।
दश सहस्त्र सँग भये भुवाला।कहि न जाय छविपरम विसाला।।
सिय सेवा हित जिन सुकुमार । अर्पण करी रूप महँ भारी ।।
जनक भाव समाधि महँ जैसे ।कीने अखिल अवनिपति तैसे।।
सिमिट चली अगनित कटकाई। मंगल बाजन की धुनि छाई।।
सतानंद नृप इक रथ माहीं । अवधि उछाह सुभाषतजाहीं ।।
किये दुंदभिन कीं धुनि आगे । धुनैं समस्त देवि सम लागे ।।
दो०-दोउ समाज में अमर मिले, मनुज वपुन छवि आन।
एकै प्रमुदित ह्वै लखैं, बैठे विमल विमान ।।

॥ मिथिला–अगवानी सजावट ॥

छ०-गजमत्त गरट्टन वाजिन ठट्टन सकल सुभट्टन साजि रहे।
भटझट्टन-पट्टन लैकर पट्टनहट्टन ह्वै चलि गाजि रहे।।
बहु साजि अमारी हौदा भारी वर जरतारी की झूलैं।
नद्दत बहुनागे जिनके आगे गिरिश विभागे नहितूलैं।।
मिथिलेसमत्तंगा सजिसब अङ्गा परम उतंगा चलतभये।
निमि कुल सरदारा करिश्रृङ्गाराभये सबारामोदभये।।
अति चंचल वाजी वनि राजी तुरकी ताजी सो हिंरहे।

राजस अतिसादी उरअहलादी घृति मरजादी ताग गहे ।।
पैदरन कतारा सुभग शृङ्गारा देव अकारा छवि छाये ।
तनु बसन सुरंगा भरे ऊमंगा जुरि इकसंगा तहँआये ।।
चामी कर स्यन्दन वृन्दन–वृन्दन चढ़े अनन्दनभटभारे ।
धरिढालविशाला करकरवाला उन्नत मालाअनियारे ।।
निमि वंशिन वारे राजकुमारे सजे शृङ्गारे पगु धारे ।
नृपजनक हँकारेलहि सतकारे अमितहजारे सुकुमारे ।।
मिथिलापुरवासी आनंद रासी–सजि खासी सिरपागैं ।
कंचुक तनु काँधे कम्मर बाँधे उर सुख धाँधे अनुरागैं ।।
इक एकन भाषैं उर अभिलाषैं अब इन आँखेसफलकरैं ।
लखि राम विवाहा परम उछाहा को महि मांहा सुखन भरैं ।।
कौशल महराजा सहित समाजा आवत आजहिं सुखसानी ।
इतने सजि साजा निमि कुल राजा गमनत काजा अगवानी ।।
कहि कहि सँग घोरा पश्चिम ओरा सबमन हर्षित गमनकिये ।
भई भीरहिं भारी सहित तैयारी पुर नर नारी हर्षि हिये ।।
बहु चाली पाल की रत्न जाल की नवललाल की कनकमई ।।
मुनि वृदं सँवारे वेद अकारे ऋचा उचारे पुण्य चई ।।
फहरात निशाना नदत निशाना गायक गाना करत चले ।
सज्जन मति मानांहिय हुलसाना किये पयाना भाउ भले ।।
रथ रत्न सवाँरो अति विस्तारो वाजिन चारो चारु महा ।
राका कशि छत्रा परम विचित्रा आतप पत्रा राचि रहा ।।
तापर मिथिलेशा चढ़्यो सुवेशा मनहुँ सुरेशा सोहिरहयो ।

लक्ष्मी निधि प्यारो राजकुमारो तुरंग सँवारो गैल गह्यो ॥
सतानंद मुनि चढ़ि स्पंदन पुनि चल्यो संग गुनिगाढ़ सुखै ।
मुनि याज्ञवल्क्य वर धर्म धुरंधर औरहु तपधर मुदित मुखै ।
पुरते छबि भारी कढ़ी सवारी भै घहरारी चरकन की ॥
बहु बजे सुहावन बाजन पावन निज धुनि छावन नाकनकी ।
दोउ नृपन मिलापा मोद कलापा देव अलापा करत सबै ।
देखन के आसी नाक निवासी गुणि सुखराशी ठानि जबै ॥
सुर चढ़े विमानन वहु विधि आनन दशहु दिशानन नभआये
बरषैं बहु फूला गत सबसूला मंगल मुलायश गाये ॥
छ०-उतते अवधेशा इत मिथिलेशा नहिं कमवेशा महराजा ।
दुहुँ पुण्यहुँ जागी जग बड़भागी सम अनुरागी छबि छाजा ॥
दश सुतर सँवारे जनक हँकारे वचन उचारे तुम आवो ।
मम अरज सुनावो नृप द्रुत आवो विमल विहावो सुखछावो ।
द्रुत धावन धाये नृप दल आये बचन सुनाये दशरथ को ।
कह जनक प्रणामा दरशनकामाचलियहि यामा गहि पथको ॥
ठाढ़े सुखमानी हिय अगवानी आँखि लुभानी दशरन को ॥
लै विशद बराता आवहु ताता अवक्षण आता हरषन को ।
सुनि मैथिल वैना भरिउर चैना सजल सुनैना अवध धनी ।
कह वचन तुतंता सुनहुँ सुमंता नहिं बिलवंता चलै अनी ॥

श्रीचक्रवर्तीजी बरात को क्रम सोमील के चलना

दो०-करहु सैन्य को शीघ्र ही, दुतिया चन्द्र अकार ।
हम अरु गुरु मद्धि में रहत, अरु युग राजकुमार ॥

आगे पैदर सुतन युत, पुनि वाजी रथ फेर।
पुनि मतंग मंडल चलै करहु व्यूह बिन देर ।।
शासन पाय सुमंत तहँ, तैसहिं सैन्य बनाय।
मिथिला ओरहिं शीघ्र गति, दियो बरात चलाय ।।

बरात को परस्पर देखा देखी मिलना युगल राजन को

।। चौबोला छन्द ।।

योजन अर्ध गई जब सैना द्वितीया चन्द्र अकारा।
देखा देखि उभय सैन्य की होत भई तिहि वारा ।।
जैसा व्यूह बनाय अवधपति चले मिलन के काजा।
तैसो व्यूह बनाय चल्यो उतते मिथिला महराजा ।।
इतते महा महोदधि आवत उत रत्नाकर आयो।
मानहुँ मिलत उमड़ि सिंधुयुग कोलाहल क्षितिछायो
फहरनि नवल निशानन की छवि तंग तरंग समाना
राजी गजवाजिन की राजी महाँ मंजविधि नाना ।।
मिलत युगल चतुरंग उमंगन विलसैं मनहुँ अकाशा
घनमंडल भलयुगल अखंडल मिलत आयदहुँ आशा
मानहुँ लै भारी तारा दल तारापति हुलसायो।
लेन हेत अगवानी आशुहिं अंशुमान को आयो ।।
ईत दिनकर सम दशरथ सोहत ग्रहसम सबरघुवंशी
उत महीप मैथिल मयंकसम उडगन सम निमिबंशी
जब ते भई सैन्य की देखा देखी दूरहिं तेरे।
तब ते भये मन्द गति दोउ दल इक एकन को हेरे।

द्वितीय चन्द्र सरिस दोऊ दल ताते प्रथम सिधारी ।
मिले कोन सो कोन चारिहूँ तब मंडल भो भारी ॥
भूमंडल समसजी सैन्य मिलि निमि कुल रघुकुल वारी ।
दूत कौशलपति मिथिलापति को को बड़ छोट उचारी ।
छैल छबीले राजकुँवर कोउ तरल तुरंग धवाई ।
जनकहिं करहिं प्रणाम हर्ष बशवाजी वेश नचाई ॥
तैसेहिं कोउ निमिवंश रँगीले हरबर अर्ब उड़ाई ॥
अभिनंदन करि अजनंदनको मिलहिं सैन्य निजजाई
पीलवान गज मुखन उठावत हय झमकावत सादी ।
मंद मंद दुहुँ दिशि ते आवत दोउ दल के अहलादी
वेला छोड़ि मनहुँ सागर युग बोरन चह संसारा ॥
तिमि दोऊ चतुरंग विराजत सूझि न परत किनारा
मिले तुरंगहिं सो तुरंग वर मिले मतङ्ग मतंगा ।
मिले पैदरन सों पैदर तहँ मिले सतांग सतंगा ॥
किये परस्पर अभिनंदन सब यथा योग्य व्यवहारा।
मुदित वराती यथा घराती पूँछि कुशल बहुबारा ॥
पगे प्रेम महवीर परस्पर हाथन हाथ मिलावैं ।
हुलसि हुलसि हँसिहँसि रस के वश हाँसीवचन सुनावैं॥
प्रतीहार कहि फरक फरक तहँ किये कछुक मैदाना।
इतते कौशलपाल गयो तहँ उत मिथिलेश महाना॥
गुरु वशिष्ठ अरु सतानंद मुनि,भरत सत्रुहन दोऊ ।
चढ़े तुरंग कुँवर लक्ष्मीनिधि आय गयो तहँ सोऊ॥

दशरथ जनक नयनजुरिगेजबदोउ अभिवंदनकीन्हों।
दोऊ पंकज पाणि पसारी मिले लूटि सुख लीन्हों ।।
कियोप्रणाम विदेह वशिष्ठहिं पूछ्यो कुशलसुखारी।
सतानंद को वंदे दशरथ द्वै पग पाणि पसारी ।।
भरत कुँवर रिपुसूदन संयुत जनकहिं कियोप्रणामा।
लक्ष्मीनिधि कोशलपति वंदे लै अपनो मुख नामा।।
सुनतहि दशरथ हिये लगाई । कीन्ह प्यार निज गोद बिठाई
पुनि वशिष्ठ के गह्यो चरण चलि गौतम सुवन सुजाना।
रघुकुल गुरु दीन्हयो अशीष तेहि पायो मोद महाना ।।
शतानन्द के चरण गहे पुनि भरत शत्रुघ्न दोऊ।
आशिष दीन्हयो गौतम को सुत भये मगन मुदओऊ ।।
दो०-पुनि लक्ष्मीनिधि मुदित मन, कियो वशिष्ठ प्रणाम ।
आशिष दीन्हयो ब्रह्म सुत, होय पूर मन काम ।।
पूछि परस्पर सब कुशलाई। उभय भूप मुद लेई महाई ।।
कह्यो विदेह बहुरि करजोरे। तुम्हरी कुशल कुशल अब मोरे
तुम सम भूप न होवन हारे । राम लखन अस जासु कुमारे ।।
सब विधिमोहिंधन्यकरिदीन्हयों।मिथिलानगरआगमनकीन्हयो
टूटी फूटी मोर मड़ैया । तिरहुत के सब लोग लोगैया ।।
तिन्हैं ज़ानबी अवध वसैया । सत्य कहौं करि धर्म दुहैया ।।
सुन मिथिला पति वचन सुखारे। कह दशरथ दृग बहत पनारे
जनकराज तुम हो सब लायक। कसन कहौ अस वचन सुहायक
ज्ञानवान विज्ञान स्वरूपा । विश्व विरागी भक्ति अनूपा ।।

दानि शिरोमणिनिमि कुलभानू ।कहँ लगि करियआप गुणगानू
मोपर कृपा कीन मिथलेश । सकल भाँति हरिलीन कलेशू ।।

श्रीयुगल राजकुमार के कुशल पुछना दोनों नृपति के

दो०-आये कौशिक संग में, मेरे युगल कुमार ।
लहे सुयश जग जो कछुक तौन प्रताप तुम्हार ।

कहँ मिथिलेश वसे दोउ भाई । कौंन हेत ल्याये न लिवाई ।।
सुनत विदेह कह्यो कर जोरी । दोउ मर्यादा राखी मोरी ।।
जग पालक बालक नृप तेरे । रिपु घालक मालक हैं मेरे ।।
पूत सुपूतन की बड़वारी । सके नशेष गणेशे उचारी ।।
राउर सुवन सहज निज जाने । त्रिभुवन महँ तिन होत बखाने
राज राजमणि बेगि पधारो।निज नंदन निजनयन निहारो ।।
अस कहि दोउ नृप स्यन्दन केरे । वैरख फिरे दोउ दल केरे ।
चली चारु जनवास बराता । सो सुख इक मुख नहि कहिजाता
दशरथ लक्ष्मी निधिहिं धुलाई । लियो आपने यान चढ़ाई ।।
जनक बुलाय भरत रिपुशाले । निज रथ लियो चढ़ाय उताले
उभय महीपन के युग जाना । मिले वरोवर कीन पयाना ।।
गुरु वशिष्ठ अरु गौतम नंदन । उभय और चढ़ि राजत स्यन्दन

दो०-चली सेन दोउ संग इक, मिलि जनवासे ओर ।
मनहुँ पसारे सिंधु युग, करि बेला को बोर ।

नगर निकट ह्वै चली बराता ।लखन हेतु पुरवासिन जाता ।।
यूथ यूथ मारग महँ ठाढ़े । नर नारी आनँद रस बाढ़े ।।

जनक नगर महँ फैली वाता। जनवासे कहँ जात बराता॥
अग्रवेत्र धर अदव जनावहिं। बंदी जन वर विरद सुनावहिं॥
बाजत बाजन विविध विधाना। वार मुखी नाचत करिगाना।
परत पावड़े वसन अमोलें। चली बरात प्रेम रस फूलें॥
सकल नगर अति आनँद छायो। देखि बरात सबहिं सुखपायो
चढ़ी नागरीक अटन निहारै। फूल भरी वर वदन उघारै॥
युवती नृपपुर को मुदि पागी। देखहिं विविध झरोषन लागी।
डगर डगर घर घरन उछाहा। रस प्रवाह सव बहे अथाहा॥
गये निवासहिं लखन नहाई। प्रभु को दीन्हीं खबर जनाई॥
पिता अवधपुर ते चलि आये। आपसु महँ पुर जन बतराये॥
कह्यो राम अतिशय सुखमानी। लषण परत हमहूँ कहँजानी।
इत सुनात सत्रुंजय नादा। मम मतंग मंदर मर्यादा॥
बजत बिजय कर मोर नगारा। इत सुनि परत महाघहरारा।
तोपै चलहिं जनक पुरमाहीं। देत सलामी मम पितु काहीं।
चलहु कहहिं गुरु पहँ अतुराई। पिता दरशहित चलहिं लेवाई
अस कहिगे मुनि पहँ दोउभाई। कहे वचन मृदु विनय सुनाई।
सुनियत नाथ पिता पगु धारे। दर्शन लोभी नयन हमारे॥

दो०-दर्शन करि आवहिं तुरत, जो आयशु गुरु होहु।
उचित होइ तौ आपहू, सहित कृपा चलि देहु॥
कहे बचन कौशिक विहँसि, चलिहैं हमहुँ विशेषि।
आज न कोउ तव पितु सरिस, लियो लोक त्रयलेषि।

मंद-मंद उत भूपति दोऊ। दोऊ सैन्य वीर सबकोऊ॥

निरखतनगर जातजनवासा।करतविविधविधि हासविलासा।
भरत-शत्रुहन दोनों भाई। कह लरिकाई बश चतुराई ।।
हमहिं बतावहु कहँ दोउ भाई।केहि थल बसत लषन रघुराई।।
राजकुँवर के बचन सुहाने। सुनत विदेह हर्षि मुसुक्याने ।।
चूमि वदन बोले सुनताता ।यहि पुर वसत युगल तब भ्राता।।
लखिहौआज अवशि निज भाई।कौशिक सहित लषणरघुराई।।
सुनि पुलके दोउ बंधु अपारा।कह्यो जनक सो अवध भुवारा।।
सुंदर भयो पुरी निरमाना ।बसे सहित जँह ज्ञान-विज्ञाना ।।
है वैकुण्ठ सरिसपुर सोई। आवहिं सदा संत सब कोई ।।
यहि विधि करत परस्पर बाता ।जात चली जनवास बराता।।
दो०-धांय धाय देखैं सबै, मिथिलापुर नर नारी।
बारहिं बार बखनहीं, दशरथ भाग्य उचारि ।।
धन्य धन्य कौशल्या रानी। धन्य धन्य दशरथ गुणखानी ।।
जाके राम सरिस सुत भयऊ। अब का भव वैभव रहि गयेऊ।
अस सबकहहिंविविधविधिवानी। दशरथ भाग्यन जायबखानी
जनक सुकृत मूरति बैदेही। जासु प्रभाउ विदित नहिं केही ।।
हम सब धन्य जनक पुरवासी। लखे भूप दोऊ पुण्य प्रकासी ।।
कोउ तिय कहैं सुनौ सखि वानी। सुन्दर जोरी जस मुनिआनी
तैसे युगल कुँवर अति लोने। दशरथ सँग आये सुठि लोने ।।
और हजारन राजकुमारे। तिनके सरिस न परै निहारे ।।
यहि विधि करहिंपरस्पर वाता। सुखन समात बिलोकिबराता
वर्षहिं सुमनस सुमन अपारा। चढ़े विमानन देहि नगारा ।।

दो०-जय मिथिला पधि अवधपति, मच्यो गगन महि शोर।
उपर अमर अधजन नगर, रह्यो विवरन बाकी ठौर ।।

### ।। जनवासा आना ।।

करत बराती हास विलासा। आये सकल सुखद जनवासा ।।
निरखे सब अनूप जनवासा। सत्य सत्य जनु स्वर्ग विलासा ।।
अवध जनकपुर ते अधिकाना। निरखि देवगन चित लोभाना
वन्यो राजमंदिर अति भारीं। शक्र शदन समजासु तयारी ।।
महा मेरु मंदर सम तुंगा। चमकहिं मनहुँ हिमालय शृंगा ।।
सभा सदन अति वन्यो विशाला। सैन्य सदन सुँदर शशिसाला
मज्जन भोजन भवन विभागा। चहुँकित चारु तड़ाग सुबागा
कल कंचन की कलित कियारी। झरहिं फुहारन सुरभितवारी
परशि भूमि लतिका लहराहीं। फूलि फूलि परिमल पसराहीं
लता भवन बरलता विताना। फूल सकल ऋतुके फल नाना।
कुँजन कुँजन गुंज्जहिं भँवरा।कलरव करहिं विहँग चहुँओरा।
तन्यो चौक महँ वसन विताना।कनक रत्नरंजित विधि नाना
दो०-चारिहुँ भाइन के भवन, राजभवन विस्तार।
भिन्न राजकारज भवन, विस्तर कोशागार ।।
गजशाला बहु बाजिन शाला। सचिव सदन भटसदन विशाला
चौहट हाट बनी हाटक की। मर्यादा आमन फाटक की ।।
कनक कपाटन कलित दुबारा। परिजन भवन परम विस्तारा
कमला तीर मनोहर वासा। योजन युगल वन्यो जनवासा ।।
शीरी सघन सुखद अमराई। शाखा क्षिति छ्वैछ्वै छबि छाई

अति उतंग चहुँ ओर दिवाला । पुरइन गोपुर बन्यो बिशाला
जानी सिये बरात पुर आई । कछु निज महिमा प्रगट जनाई ।
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बुलाई । भुप पहुनइ करन पठाई ।।
दो०-सिधि सब सिय आय सुअकनि गई जहाँ जनवास ।
लिये संपदा सकल सुख सुरपुर भोग विलास ।।
तब श्रीप्रभु लीलादिक प्रवीनि । शक्ती निज अवाहन कीनी ।।
सिद्धै रिद्धै पुनि ध्याई । सकल विभुति लिये ढ़िग आई ।।
तिमहि कृपा युत बचन सुनाये । इहा भानुकुल भूषण आये ।।
सेवन उचित सुवेष बनाई । तुम कछु जाय करहु पहुनाई ।।
परम शक्ति वच सिरपर मानी । जनवासे गवनी मुदसानी ।।
सुन्दर जुवतिन केतन धरै । मृगनैनी शसिमुख सुकुमारै ।।
कौशल्याआदिजहाँनृप वामा।निकट जायजथविधिकीन्हप्रनामा
दो०-पुछै विनय करै निपुन, रहिती हम रनिवास ।
रानी सुनैना स्वामिनि, तिन पठई दीन्ह तीनपास ।
निज दासीगन कै महरानी । सेवा करावहु मनमानी ।।
मंजन हित एके मतिवाना । लिये तप्त जल सौरभ साना ।।
एकै मुकुट मसि संपुट धारै । मृग मद कुमकुम चन्दन गारै ।।
लिये पान संपुट वर वाला । एकै सुमन रचि सुचि माला ।।
एकैजु कौविद पाक बिधाना । रचै सुउत्तम व्यंजन नाना ।।
पुनि ठकुरानिन लौ रुख पाई । करै प्रमोद करन सेवकाई ।।
यौही के चित वत वनि दासा ।ठाढ़ि रहै मुदित नृप पासा ।।
जानि जनक सेवक निज पाही । सेवन करत निवारत नाही ।।

कार्य कदाचिक जोहित होई । मन सौ करहि निरन्तर सोई ।
पावै सम सतकार बराती । कौनहु विधि नहि लखहिं दुभाँती
जो सुख देवन मै विबुध सुनावै । ते सब कौमहि प्रगट दिखावै।
दो०-जानी सिय महिमा कहै । राम रघुकुल केतु ।
प्रेमासिन्धु मन मगनहुव, समुझि हिय को हेतु ॥
॥ सिय महिमा रघुनाथ ही जानै ॥
सचिव सभासद भट सरदारा । सबके पृथकहिं पृथक आगारा
गमनी जब बरात जनवासा । लखे यथा सुरलोक विलासा ।
कहे जनक कोशलपति पाहीं । यदपि रावरे लायक नाहीं ॥
तदपि निवास करहु नृपराई । गुनि निज सदन सहित सँकराई
जो कछु बन्यो सुदिय बनवाई । नाथ दिखावत लाजहिं आई ।
कह्यो अवधपति हँसि सुख मोई। याते अधिक बिकुँठहिं होई ।
दो०-भल रचना कीन्हीं नृपति, दिय सुरलोक बनाय ।
बसब इते हम सब सुखी, आप बसो गृह जाय ॥
जनक वेगि अब गणक बुलाई । तनक चित दै लग्न सुधाई ॥
गुरुवशिष्ठ गौतममुनि काहीं।ज्योतिष के आचारण बोलाईआहीं
शतानन्द आदिक मुनिराई । रचहु समाज आजउत जाई ॥
करि सिद्धान्त लग्न महिपाला । फेरि करहु व्यवहार बिशाला
याचक बहु याचन विधि कीना । दान होत दाता आधीना ॥
तुम दाता विदेह महिपाला । हम सउर याचक एहिकाला ॥
आये अमित नरेश कुमारा । अब सबको नृप आप अधारा ॥
दानि शिरोमणि भूप बिदेहू । मिटिहैं अवसि सकल सन्देहू ॥

सुनत सयुक्ति अवधपति बानी । भूप विदेह महामुद मानी ।।
बोल्यो मंद मंद मुसुकाई । काक्षति जहँ बशिष्ट मुनिराई ।।
असकहिमाँगिबिदा मिथिलेशा । वंदन करि पुनिचल्यो निवेशा
जाय निवास बिदेह उदारा । पठयो विविध भाँति सत्कारा ।

दो०-सुमति सचिव गौतम सुवन, ल्याये सब सत्कार ।
दियो बरातिन वास वर, यथा योग्य आगार ।।

सुखी बरात बसी जनवासा । लहे सकल जनु स्वर्ग विलासा ।
कनक कलश कोपर बड़ धारी । कुंड कुँभ मंजूषा झारी ।।
भरि भरि भोजन पान प्रकारा । सुधा सरिस पकवान अपारा
सत्कार के लिये नाना प्रकार के वस्तु और भोजन लाते हैं।
पुहुप विभूषण रत्न समेतू । विविध भाँति फल सुधा निकेतू ।
विविध भाँति की बनी मिठाई । वस्तु अमित घृत वस्तु सुहाई।
विविध भाँति के रुचिर अचारा । लेह्य चोष्य वर पेय प्रकारा
भोजन योग्य वस्तु बहु औरा । जे नर लोक माँह शिरमौरा
जौन बस्तु प्रिय देवन काहीं । दुर्लभ जे महिं लोकहिं माहीं ।।
सकल बरातिन बसन अपारा ।रह्यो जौन जस लघु बड़वारा ।
कनक रजत रंजित जरतारी । तन चारक पट मुकुत किनारी
जे लखि भूपति देव सिहाही । खान पान धारण मन माहीं ।।
यथा योग्य जस जौन बराती । अतिउत्तम नृप कहँ सब जाती।

दो०-मंडप कुसुमन के विविध, पुहुपि फरस बिस्तार ।
और पदारथ मोद प्रद, कहँ लगि करिय उचार ।।

भरि भरि काँवरि सुघरकहारा । तिमिभरि शकटन ऊँटअपारा
शतानन्द अरु सचिव लिवाई । कोशल पालहिं नजर कराई ।।
दीन्हें पूरि बरातिन काही। रही कछुक अभिलाषा नाहीं ।।
भूपति हेतु पदारथ जेते । सादर लै बांटे नृप तेते ।।
विश्व उदार शिरोमशि राऊ। लघु बड़ जान्यो एकहिं भाऊ।
शतानन्द अरु मंत्रि सुहावन । आये अवधनाथ ढ़िग पावन ।।
तिन आगे चिउरा दधि राखे। बोले बचन जनक जस भाखे ।।
जोरि पाणि युग नावत शीशा । नृपति कह्योसुनु अवधअधीशा
दधि चिउरा उपहार हमारा । लेहु कृपा करि अवध भुवारा।
अवध विभव बासव नहिं तूलै। किमि सत्कार करौं सुख मूलैं।
जो कछु विभव नरेश हमारा । सो सब अहै विशेष तुम्हारा ।।
सुनत विदेह नृप बचन नृपराई । दधि चिउरा लै शीश चढ़ाई।
दो-०सादर बोल्यो अवधपति, कहि प्रणाम मुनि मोर ।
पुनि विदेह सो अस कह्यो, सकल अनुग्रह तोर ।।
शतानन्द अरु सचिव को,कहि सादर एहि भाँति ।
विदा कियो दशरथ नृपति,करि प्रणाम मुदमाति ।।

।। श्रीविम्वामित्रजी दोनों भाई सहित आना ।।

दो०-भोजन काल विचारि कै, उठन चह्यो महिपाल ।
हल्ला परयों बरात में, एक वार तिहिकाल ।।
राम लखन लै संग में, दशरथ दर्शन हेतु ।
आवत विश्वामित्र अब, तुरत गाधि कुल केतु ।।

मध्य दिवस वह शुभ समय, जानि गाधि कुल चन्द ।
चल्यो अवधपति मिलन हित, सहित लखन रघुनन्द ।
॥ कवित्त ॥
भोजन करत रह्यो भोजन विसारि दियो,
पान को करत जोई पान विसरायो हैं ।
सोवत रह्यो जो वैसहिं सो उठि धायो,
आशु मज्जन करत धायो नीके न नहायो है ॥
करत होतो जो काम जौन-जौन जोई जन,
परत अवाज कान तौनहीं भुलायो है ।
सकल बरात माहिं चारों ओर शोर छायो,
रघुराज आज आयो रघुराज आयो है ॥
दो०-प्रेम लपेटे अटपटे, सुनी सखन कै वैन ।
मुनि संकोच बस नहिं भनता बिहँसत राजिव नैन ॥
कीन्ह्यो शैयन प्रबेश जब, राम लखन मुनि संग ।
जुरे अवधवासी सकल, मच्यो महासुख रंग ॥
परहिं चरण कोउअवध निवासी ।देहि प्रदक्षिण कोऊसुखरासी
॥ श्रीमुनिजी जनवास आना ॥
दो०-लेन चले आगे कछुक, कौशिक की अगुवानि ।
मनो महाँ सुख सिंधु में, हिले जन्मधनि जानि ॥
उत्तते आये गाधि कुमारे । सहित युगल दशरत्थ दुलारे ॥
इतते करि बशिष्ठ मुनि आगे । राज समाज गई अनुरागे ॥
विश्वामित्र बसिष्ठहिं देखी । कियो प्रणाम महामुद लेखी ॥

तिहि अवसर आये दोऊ भ्राता । गहे दौरि पद जल जाता ॥
आशिष दै बसिष्ठ मुनिराई । लिये दुहुँन कहँ अंक उठाई ॥
चूमि वदन सूंघ्यो मुनि शीशा । चिरजीवहु अस दीन अशीशा ।
निरखि गाधि सुत कौशल राऊ।गिरि गहि रह्यो गाढ़ युगपाऊ
दै अशीष मुनि चहत उठाईं । उठत न भूप प्रेम अधिकाई ॥
जसतसकै मुनि नृपहि उठायो।पुनि-पुनि मिलतनयन जलछायो
पूछत कुशल पुलकि मुनि नाहा । वहतभूप दृग अम्बु प्रवाहा ॥
नाथ कृपा फल मुहि दरशायो । राम लखन मैं आजुहिं पायो ॥
राम लखन पुनि दोउ सुखसाने । पिताचरण पंकज लपटाने ॥
लिय उरलाय लगाय भुवाला । तुले न ब्रह्म मोद तिहिकाला ।

श्री दोनों भाई को चक्रवर्ती जी का दुलार

दो०-ताहि गोद लै अवधपति, नयनन नीर बहाय ।
कहत गाधिसुत की कृपा, गयो पूत मैं पाय ॥

❀ चारों भाई का परस्पर मिलन ❀

चूमत मुख सूंघत पुनि शीशा । गदगद गर नहि वदत महीशा ।
भरत शत्रुहन पुनि दोउ भाई । परे चरण रघुपति के जाई ॥
राम दुहुँन उर लियो लगाई । वार-वार दृग बारि बहाई ॥
भरत चरण किये लखन प्रणामा । सो दियो आशिषपूजै कामा
रिपुहन लखन चरण शिर नाये । परम प्रमोद बंधु दोउ पाये ।
रिपुहन भरत दौरि पुनि जाई । कौशिक चरण गहे हरषाई ॥
गाधि सुवन दिये आशिरवादा । सुखि रहौ ध्रुव भुष मर्यादा ।

दो०-यहि बिधि सबसे मिलि तहाँ, पितु मुनि बंधु समेत ।
जाय वितान तरे मुदित, बैठे कृपा निकेत ॥
कनक सिंहासन युगल मँगाये । गुरु बसिष्ठ कौशिक बैठाये ॥
जस तस कै धरि धीरज राजा । बोल्यो कौशिक सों तजि लाजा ।
गृहते मोहि बुलाय पठायो । प्रभु शासन शिर धरि इत आयो ।
चारिहुँ कुवर रावरे केरे । मैंनहिं जानहुँ हे मुनि मेरे ॥
उचित होय सो सासन दीजै । मुहिं अपनो सेवक गुनि लीजै ॥
पालै पासै जो जेहि काही । सो ताको पितु संशय नाहीं ॥
अह कहि राम लखन गहि हाथा ।सौंप्योनृपहिंमुदितमुनिनाथा
दशरथ कह्यो न मैं अवलैहों । दान वस्तु नहिं घर लै जैहौं ॥
मुनि मुसुक्याय कही तन बानी । राउर सुत सबके सुखदानी ॥
अब यह शासन मम सुनि लीजै । चारहुँ कुँवर संग महँ कीजै ।
हम वशिष्ठ पुनि आउब काली । करब विवाह उछाह उताली

### श्रीमाताजी के पास जाना दोनों भाईयों की

दो०-मातु आगवन श्रवण सुनि, रघुकुल भूषण राम ।
पितु निदेश लहि मिलन हित, भे परि पूरणकाम ।
आवत राम मातु हरषाई । करत आरती द्वारहिं आई ॥
राम लषण प्रिय पायन लागी । मातु उठाय प्रेम रस पागी ॥
चूमि बदन जल लोचन ढारी । अधिक सनेह मगन महतारी ॥
सबन्ह मातु बन्दे रघुराई । प्रीति प्यार शुभ आशिष पाई ॥
मातु कौशिला लीन्हैं गोदी । देखि राम हीवति अति मोदी ॥
लालस योग लाल तोहि लाये । भई सुखी लालन फल पाये ॥

गये कठित दिन तुम बिन देखे । मानहुँ बृथा तौन दुख देखे ॥
सुठि सुकुमार लाल गभुआरे । बहु निशिचरी निशाचर मारे ।
सकल अमानुष लागति वाता । भई कृपा कौशिक तब त्राता ।
मधुर सुभाव नेह भरि माई । भूली रघुपति पर प्रभुताई ॥
अरुण धती आदिक मुनि वाला । वन्दत भये सभक्ति कृपाला ।
शान्ता भगिनी के पग लागे । मिले यथा क्रम अति अनुरागे ॥
दो०-प्रेम भरे मृदु बच्चन सुनि, कौशिक कृपा बताय ।
मधुर मंजु प्रिय वैन प्रभु, दिये मातु समुझाय ॥
अरी मातु मम भोरी भारी । घात टरो कह बारम्बारी ॥
खेल समान वाण इक फेंका । नसे निसाचर बचे न एका ॥
विन श्रमविन संग्राम सुअम्बा । दहे दैत्य गुरु कृपा कदम्बा ॥
तोरन धनुहि प्रथम री मइया । किय गुरु चरण सरोज वलैया
जाय समीप छुवत धनुमाई । आप टूट शिव मनहुँ पढ़ाई ॥
चाप छुयो नहिं रावन वाना । कहि कठोर बहु करसि बखाना
गुरुप्रणाम आपसु बिनु माता । सबहिं चले अभिमान जनाता
बिन गुरु कृपा महाभव चापा । तोरि सकै नहिं ब्रह्महु आपा ॥
दो०-गाधि सुवन सहमातु सुनु, दिन दिन बढ़त अनंद ।
अबलौं दुख जान्यो नहीं, पग पग परमानंद ॥

श्रीमाताजी का समाचार पूछना श्रीरामजी से

सुनत मातु रघुवर मुखवानी । सोचहिं तजी हिये हरषानी ॥
प्रीति रीति मिथिलाधिप केरी । स्वागत सेवा कही निबेरी ॥
लक्ष्मीनिधि प्रिय प्रीतिहुँ रामा ।वरण्यो यथा गये तिनधामा ।

सुखद सुनयना नेह सुनायो । सुनत अम्ब अतिशय सुखपायो ।
नाना विध सनमान अनूपा । जिनहिं बिलोकि सराहहिंभूपा।
खंडन बहु मेवन के नीके । मोहन भोग तुष्ठ कर ठींके ।।
राजन भोग असन अभिरामा । चार प्रकार कहौं किमिनाना।

श्रीचारों भाई सहित दशरथजी के भोजन कराना

दो०-उठयों भूप भोजन करन, संयुत चारि कुमार ।
चले राजवंशी सकल, संग करन ज्यवनार ।।

छन्द चौबोला

भोजन करन लग्यो भुवाल मणि भोजन शाला माही ।
आगे पुटन पटन बैठायो, चारिहुँ भाइन काहीं ।।
सिगरे राजकुमार और तहँ बैठे आसन जोरे ।
बैठे चक्रवर्ति चामीकर चौकी महँ मधि ठोरे ।।
कनक थार कंचन भाजन भल भरि भरि व्यंजन नाना ।
प्याले पुरट विशाले जल भरि लाये समुद सुजाना ।।
कंठन कठुले कड़े करन में हीरन जड़े अपारे ।
सूपकार शुचि पहिरि लसत युग पीताम्बर पखारे ।।
भोजन करत जात भूपति मणि लखत लषण अरुरामैं ।
पूछत कौन भांति मखराखे करि निशिचर संग्रामैं ।।
कौन भांति ताड़िका संहारी लगी न डर लखि घोरा ।
सुनियत गौतम नारि प्रगट भई परशि पाउँ पुनि तोरा।
कौन उपाय पुरारि पिनाकहिं भंज्यो मध्य समाजा ।
कहँ पायो इतनो बल लालन कहाँ बली सब राजा ।।

प्रभु मुसक्याय कह्यो पितु मैं नहिं जानहुँ कारन कोई।
आप प्रताप कृपा कौशिक की मोर जोर यतनोई॥
कौन कलेऊ देत रह्यो तोहि किमि सोये तृण सेजू।
चले चरण कोमल कठोर महिं मुनि कसक्यो न करेजू॥
वन वन आतप वात सहत बहु ब्यथा भई तनु माहीं।
कौ सोपति सब भाँति कियो तब घर के कोउ संग नाहीं।
प्रथम लषण लरिकाई के वश कहे वैन अतुराई।
पिता अवधते कढ़त महामुनि विद्या युगल पढ़ाई॥
का कहिये विद्या प्रभाव पितु भूख प्यास नहिं लागी।
थाक नीद आलस्य अभीलग हमरे तनु ते भागीं॥
राम कह्यो सोपति सब जैसी कौशिक करी हमारी।
तस नहिं कीन्हीं अवध महल में त्रिशत साठि महतारी॥
जानि परो नहिं विपिन दुसहु दुख घरते सुख अधिकाना।
जिमी राखती पलक नयन तिमि, राख्यो मुनि भगवाना॥
सुनि भूपति करनी कौशिक की महामोद मन माक्यो।
बारहिं बार सराहिं पुलकि तनु, समाधान उर आन्यो॥
यहि विधि भोजन करत सुतन युत वदत बचन सुखसाने।
करी आचमन उठे अवनिपति आनँद माहि अघाने॥
धोय चरण कर पहिरि वसन कछु शयनसदन नृप गयऊ।
इतै राम लघु बंधु सखा सब बैठे प्रमुदित भयऊ॥
पूछन लागे प्रभु चरित सब भरत लाल करि आगे।
कहन लगे प्रभु चरित कियो जस, सहज लाज रसपागे।

हँसि बोल्यो कोउ राम विवाहहु काहे जनककुमारी ।
जहँ चाहहु तहँ तुम पषान ते लेहु प्रगट करि नारी ।।
सुनत हाँस रस हँसे सखासब प्रभु नेसुक मुसक्याने ।
लषण कही तुम प्रगटत पेखे सब थल नारि पषाने ।।

## श्रीलक्ष्मीनिधिजी कौशल्या अम्बा के पास मिलना

यहि विधि राम मातु पितु पासा ।कबहुँसखनसहकरत सुवासा
सुनत सुनावत मैथिल प्रेमा । मनन करत भूतल भल नेमा ।।
समयसमय लक्ष्मीनिधिआवहिं । करन प्रबंध सुभाव समावहि।
कुअँरहिं पाइ राम रघुनन्दन । बोलेउ बचन सुखद उर चन्दन
राउर देखन मातु हमारी । लखन हमहिं कहीं सुखकारी ।।
सुनतहिं आपनु भाग सराहीं । चले कुअँर रघुवर सँगमाही ।।
जाइ तुरत पहुँचे रनिवासा । मातु कौशिला जहाँ अवासा ।।
कीन्ह प्रनाम माथ महिलाई । पदरज लीन्हेव शीश चढ़ाई ।।
मातु परसि सिरसूँघी सुभाया । कीन्हेव अमित प्यारसुखछाया
श्याल भाम दोउ सुतन निहारी । भई मगन मन नरपतिनारी
दो०-करि प्रणाम मातन अवर, सब सन पाइ अशीश ।
प्रेम पगे राजत कुवँर, सहित राम जगदीश ।।
मातन सुखद भेटि बहु दीन्ही ।परि परिपग मृदु विनयसुकीन्ही
कीन्ह कौशिलहुँ प्यार अघाई ।बीड़ा गंधमाल पहिराई ।।
कही बहुरि सुनु जनक कुमारा । मातहिं कहब प्रणाम हमारा
करहिं प्रतीक्षा शुभ मूहूर्त की । मिलनि परस्पर सखिसुपूतकी
समधिनिसमधिनि समधीसमधी । प्रथम भेट की होवतिअवधी

देशकाल अरुकुल अनुसारा। मिलन समय गुरुजन निरधारा।
सोइ समय मम आनँद दाता। मातहिं कहेव सुनहु तुम ताता।
आयसु पाइ स्वशीश नवाई। गयउ कुवँर हिय धरि रघुराई।।
दो०-आय भवन मातहिं सुखद, दीन्ही बात सुनाय।
सुनत सुनैनहिं हर्ष अति, आपन भाग मनाय।।
मुदित बराती अहनिश रहहीं। छन छन नवनव आनंद लहहीं।
आई लगनहिं प्रथम बराता। पुर प्रमोद नहिं बरणि सिराता।
बैठे दशरथ सहित ममाजा। ढिगहिं सुभग सुत चारहु भ्राजा
श्यामगौर सुँदर जुग जोरी। देखत सकल नारि नर भोरी।।
बैठे राम भरत दोउ सोहै। सहसा लखि न परै मन मोहैं।।
पुर प्रमोद जानिय येहि भाँती। चातक लहेउ बृन्द जनुस्वाती।
कहहिं परस्पर लोग लोगाई। अनुपम मय सुँदर सब भाई।।
राम सिया सौंदर्य निधाना। इन समयइ नहिं आन दिखाना।
दशरथ जनक अहैं तप रुपा। लहे राम सिय सकल अनूपा।।
राम सिया शुभ व्याह उछाहा। देखि देखि सब भरब उमाहा।
मिथिला रँगी राम के रंगा। रामहुँ रमै अवशि तेहि संगा।।
दो०-निज निज शुचि संबंध गुनि, पुलकत हृदय अपार।
दरश परश बतियाब सब, करिहैं मन अनुहार।।
अस अभिलाषा करहिं शुभ, बहु विधि मैथिल लोग।
छन-छन होवहिं सुख मगन, लखिहहिं ब्याह सुजोग।।
सिया स्वयंवर रहे भुजारा। ते सब देखन ब्याह सम्हारा।।
बसे सकल गृह काज बिसारी। देखि राम नित रहैं सुखारी।

नृप समीप सोहही सुतचारी । जनुधन धरमदिक तनुधारी ॥
सुतन समेत दसरथहि देखी । सहित नगर नरनारि विसेषी ।
जनक सुकृत मुरति बैदेही । दशरथ सुकृत राम धरे देही ॥
इन्ह सम काहुँन सिव अवराधे । काहुँन इन्ह समान फल लाधे ।
हमसब सकल सुकृत कै रासी । भय जग जनमि जनकपुरवासी
जिन्ह जानकी राम छवी देखी । को सुकृत हम सरस बिसेखी ।
पुनी देखब रघुबीर बिहाहु । लेब भली बिधि लोच्चन लोहू ॥
कहहि परस्पर कोकिल बयानी। एहिं बिआहुँ बड़लाहु सुनयनी
बड़े भाग बिधि बात बनाई । नयन अतिथि होइहहि दोउभाई
सखि जस राम लखन करजोटा । तैसई भुप संग दुई ढ़ोटा ॥
श्याम गौर सब अंग सुहाए । ते सब कहहि देखी जे आए ॥
कहा एक मैं आजु निहारे । जनु बिरंचि निज हाथ संवारे ॥
भरतु रामही की अनुहारी । सहसा लखि न सकही नरनारी।
लखन सत्रुसूदनु एक रूपा । नख सिख ते सब अँग अनुपा ॥
मनभावहीमुख बरनि न जाही ।उपमा कहुँ त्रिभुवनकोऊनाही

॥ छन्द ॥

उपमा न कोऊ कह दास तुलसी कतहु कबि कोबिद कहैं ।
बल बिनय विद्या सील सोभा सिंधु इन्ह सेएइ अहैं ॥
पुर नारि सकल पसारी अंचल बिबिध बचन सुना दही ।
ब्याहिअहुँ चारिउ भाई एहिं पुर हम सुमंगल गावही ॥
सो०-कहहिं परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलक तन ।
सखि सब करब पुरारी पुन्य पयोनिधि भुप दोऊ ॥

दो०-राम सिया शोभा अवधि सुकृत अवधि दोउ राज।
जहँ तहँ पुरजन कहहिं अस मिलि नर नारी समाज।

॥ छन्द चौबोला ॥

परिचर बोलि कह्यो कोशल पति रामहि ल्याउ लिबाई।
आवत सभा हेतु मिथिला पति आवैं चारिउ भाई॥
मंत्री सचिव सुभट सरदारन राजकुमारन काही।
कुल के सकल बृद्ध रघुवंशी ल्याउ लिवाय इहाँहीं॥
डेरन डेरन दौरी द्रुत सो सासन दियो सुनाई।
सजि-सजि साज सबै रघुवंशी आये सभा सुहाई॥
युगल सिंहासन मनिन जटित तहँ सभामध्य धरवाये।
तैसेहिं युगल सिंहासन सनमुख धरवायी छवि छाये॥
तिनते लघु पुनि पंचसिंहासन सनमुख सुभग सुहाये।
निमि बंशी रघुवंशिन आसन यथा योग्य लगवाये॥
राजकुमार सब रघुकुल के जस-जस आवत जाहीं।
यथा योग्य अपने-अपने थल बैठत जात सुहाहीं॥
सादर लै सुमंत बैठावत यथा राज मरजादा।
सचिव मुसाहिब नृप सरदारन वदत भूप धनिवादा॥
जुरे समाजित सब रघुकुल के दशरथ के दरबारा।
राज विभूति विराजहिं सब वर राज समाज अपारा।
तिहि अवसर आये रघुनन्दन सँग सुन्दर त्रय भाई॥
माथे मुकुटमणिन के नाथे माथे कन्ध सुहाई॥

जगमागात जामा जरकस को कसि कम्मर रतमाली ।
डारे ढ्ढालन में कर बालन ढालन पीढि विशाली ।।
चरण बसन मणि जड़ित उपानहु वामपाणि धृतचापा ।
दाक्षिन कर सुन्दर शर सोहत प्रगटत परम प्रतापा ।।
कानन कुडल मंडन मंडित आनन शशि मदगारी ।
केशर रेख विशाल भाल में श्याम अलक मनहारी ।।
पंच मणिन की अति विशाल उरलसत माल छबिजाला ।
भुज अंङ्गद कर कटक विराजत कटि-२ बंध विशाला ।।
मणि मंजीर हीर के मंड़ित पद पंकज न सुहाहीं ।
मनु श्रृंगार रस धारि चारि वपु आवत वत्सलपाहीं ।।
चारि-चारि चारहु के चामर चलत जाहिं चहुँओरा ।
उदयभान मनु युग रवि युग शशि भ्राजत भूप किशोरा ।
आये सभा मध्य रघुनायक ठाढ़ी भई समाजा ।
किये प्रणाम पिता के पद गहि आशिष दिन्हयौ राजा ।
बैठे कनकासन महँ सनमुख सभा प्रभा महँ पूरी ।
धावन धाय आय तिहि अवसर कह्यो जनक नहिं दूरी ।
पठयो वेगि सुमंतहि दसरथ ल्यावहु आशु लिवाई ।।
जाई सुमंत विदेह भूप सो कह्यो बचन शिरनाई ।।
महाराज मिथिलेश कुँवर युत आशुहिं धारिय पाऊँ ।
तुम्हरे दरश आस करि बैठे सभासु कौशल राऊ ।।
सुनत विदेह वचन मंत्रिन के सपदि सैन्य चलवायो ।
मैं आवत हों आशु उतै अब अस कहि सचिव पठायो ।

गै अरगन वाजिन की राजी रथ यूथन तजि द्वारे।
चलो सुखासन चढ़मिथिलापति चहुँ कृतनिमि कुलवारे
सुनि नकीव को शोर जोर तहँ अवधनाथ सुखमानी।
करि चारिउ कुवँरन को आगे चल्यो लेन अगवानी॥
उत लक्ष्मीनिधि को आगेकरि निमिकुल सहितसमाजा
मिलन हेत दसरथ के आयो वर विदेह महाराजा॥
सभा द्वार लौं जयति अवधपति निमिकुल कुमुद मयंका
करि प्रणाम सुखधाम प्रेमवस लियो भुजन भरि अंका।

श्री जनक जी महाराज का सभा में आना

सो०-कियो विदेह प्रणाम, महाराज अवधेश को।
पूछि कुशल तिहि ठाम, मोद मग्न दोऊ भये।

॥ छन्द चौबोला ॥

जनक नन्दन को पुनि किय वंदन नंदन जनक ललामा।
पंच कुमार चले आगे कछु पाछे भूपति दोऊ॥
सो छवि देखि मगन आनँद महँ दोउ कुलके सब कोऊ।
मनहुँ ज्ञान अरु प्रेम रुप धरि संग पंच रस लीन्हे॥
मिलन परस्पर अति प्रमोद भरि निज अधिकारहिं चीन्हे।
उभय उच्च सिंहासन में दोउ बैठे भूप समाना॥
लघु सिंहासन पंच विराजै पाँचों कुवँर सुजाना।
अपने दहिने दिशि बैठाये दशरथ निमि कुलराजै।
आप विदेह वामदिश बैठे गुणि मर्यादा काजै॥

बैठे विदेह ओर कुलके सब यथा योग्य सरदारा ।
दसरथ ओर बैठ रघुकुल के जिहि जस रह अधिकारा ।
अतर दान अरु पान दान बहु रत्न सुमन के हारा ॥
ल्याय सुमंत ठाढ़ भयो आगे धरि पन्ना के थारा ॥
कौशलपति निज पाणि पान दिये सहित सनेह विदेहैं ।
पुनि निज हाथन अतर लगायो मिथिलापति के देहैं ॥
पितुरुख लखि उठिके रघुनन्दन जनकहिं अतर लगायो
निज करलै विदेह को सादर प्रभु ताबूल खबायो ॥
पुनि उठि भरत पाणि अपने सोसुमन माल पहिरायो ।
लक्ष्मीनिधि के राम आप पुनि रत्न माल गलनायो ॥
अतर लगायो भरत अंग महँ वीरा लषण खवाई ।
शत्रुशाल सिगरे निमिवंशिन किये सतकार बनाई ॥
प्रतिहार आयो तिहिं अवसर मुखजय जीव सुनाई ।
विश्वामित्र वशिष्ठ मुनिन की दियो सुनाय अवाई ॥
मुनि आगमन सुनत दोउ भूपति चले लेन अगवाई ।
करि आगे पांचों कुमार कहँ द्वार देश लौ जाई ॥
विश्वामित्र वशिष्ठ चरण महँ पंच कुमारन डारी ।
किये दंडवत दोउ नरनायक कहे नाथ पगुधारी ॥
लै दोउ मुनि नायक नर नायक सिंहासन बैठारे ।
सविधि दुहुन को पुनी परशपद कह धनि भाग्य हमारे
लहि सासन निजनिज सिंहासन आसन किये भुवाला ।
मनहुँ विवेक धर्म ढिग आये ज्ञान विज्ञान विशाला ॥

पाचहुँ कुंवर बैठे कनकासन मुनि नृपके मधि माही।
युगल छत्र क्षिति नाथन माथे चमर चलत चहुँघाहीं
निमिकुल रघुकुल की समाज लखि दोउ मुनि वैन उचारे
धनि धनि कौशलपति धनि मिथिलापति को नृपसरिस तुम्हारे
कोटिन वर्ष वयतीत लहे तनु कवहु न अस मुद लेखे।
यथा दराज समाज आज हम सम समधी दृग देखे॥
कबहु विवाह उछाह लखब कब अब सब भव अभिलाषी।
दोउ नृप जब कहँ लग्न साधिये तब ह्वै शिवसाषी॥
का पूछहु हमसे दोउ मुनि वर यह सब हाथ तुम्हारे।
निमि कुल रघुकुल तुम अधीन अब नहिं शिर भार हमारे॥
कह्यो वशिष्ठ काल्हि कौशलपति जनक निवास सिधै हैं।
कहँ हम कौशिक शतानन्द मिलि लग्न विचारि वतै हैं॥
यही कियो सिद्धांत उभय नृप सुखी भये सब लोसू।
माँगि विदेह बिदा दशरथ सों चल्यो भवन विनशोगू॥
द्वार देश पहुँचाय अवधपति संध्या करन सिधारे।
निज-निज भवन कीन्हयो प्रवेश पुनि चारिहु वान्धु सुखारे

जनकजी वशिष्ठजी विश्वामित्र को बोलना

॥ छन्द चौबोला॥

मंडित भयो सभा मंदिर महँ कौन तासु समदूजा।
गौतम जाज्ञवल्क्य आन्यो तहँ भाई मुनिन समाजा।
सतानन्द अरु सचिव सुदामन धावन पैठे बुलायो।
पुनि वशिष्ठ अरु विश्वामित्रहिं बुलवन दूतपठायो।

मिथिलाधिप दोउ बंधु चले द्रुत सतानन्द करि आगे
कौशिक पद पंकज गहि प्रणमे कर पंकज अनुरागे।
सतानन्द पुनि गाधि नन्दन कहँ वंदे बृद्ध विचारी।
तिहि औसर बशिष्ठ ब्रह्मसुत लाये सभा मंझारीं।
कनकासन आसीन कियो नृप युगल महातप धारी।
तैसे सतानन्द बैठाये हेमासन महराजा।
कीन्ह्यो अति सतकार बंधु दोउ भये मुदित मुनि राजा।
चरण पखारि सीचि सिगरे घर युग वसु विधि करि पूजा
युग बंधु तहँ युगल मुनिन सो क्यौ न हम सम दूजा॥

विवाह की लगन सोधना परिकर्ण है

दो०-बोलि पठावहुँ अवधपति, लग्न शुधावहु आज।
ब्याह करावहु सीय को, धावहुँ सुयश दराज॥

इतै विदेह सनेह सहित पुनि बोल्यो बैन सुनावन।
कहेहु विनय कहि कै प्रणाम मम हम तुवदर सनआसी।
सुनि मिथिलेश निदेश सुहावन रथ चढ़ि चल्यो हुलासी।
आयो सचिव सुदावन द्वारे द्वारहिं खबरि जनायो।
जानि विदेह मुख्यमंत्री नृप आशुहिं पास बुलायो॥
अभिवादन करि कै आमात्य वर कह्यो वचन करजोरी
नाथ विदेह बिनय कीन्ह्यो अश दरसन की रुचि मोरी
कौशलनाथ हुलसि हँसि बोल्यो देखन निमिकुल राजै।
हमरेहु अलि बाढ़ी अभिलाषा काज अवशि उतआजै।

कह्यो सुमंतहिं देहु दुन्दुभी हम विदेह पहिं जैहैं ।
चारिहु कुँवर रहहिं जनवासे नहि मम संग सिधैहैं ॥
सुनत नरेश सुमंतहु तुरतहिं दियो दिवाय नगारा ।
सजि आई चतुरंग चमू तहँ सुभट शूर सरदारा ॥
चढ़ि स्पंदन गमन्यो दशस्यन्दन अजनन्दन महाराजा ।
बाजे बाजन विविध सुहावन लस्यो निशान दराजा ।
जाय सुदावन कह्यो जनकसों आवत रघुकुल नाहा ।
देखन को धायो पुरवासी भरि उमाह मन माहा ॥
देखि देखि दशरथ को दृग भरि वदनहिं करतसराहैं ।
जासु पूत सुपुत्र रघुपति सो तेहि समको जगमाहैं ॥
दीनन सँपति अमित लुटावत आवत मंदहि मंदा ।
गयो विदेह महल के द्वारे करि पुरजन सानंदा ॥
सुनत विदेह अवधपति आगम उठयो समाज समेतू ।
विश्वामित्र वसिष्ठ आदि लै गमन्यो निमिकुल केतू ॥
द्वार देश ते लियो भूप कहँ कियो प्रणाम विदेहू ।
कर गहि चल्यो लिवाय सभागृह सादर सन्यो सनेहू ॥
दै आसन दहिने सिंहासन पूछि कुशल कुशलाई ।
बैठयो लहि निदेश निज आसन मिथिलापति मुदपाई ।
अतर पान मँगवाय सचिव कर वीरी खोल खवायो ।
लै सुगंध सब अंग लगायो किय सत्कार सुहाये ॥
तिहि अवसर लक्ष्मीनिधि आयो शिरनायो नृपकाहीं ।
लियो भूप बैठाय प्रीति भरि अपने अंकहि माहीं ॥

### श्रीकुशध्वजी सबको बराती को सतकार करना

जनक अनुज सतकार कियो पुनि सब रघुवंशिन काहीं ।
विश्यामित्र वशिष्ठहिं कीन्ह्यो कौशल नाथ प्रणामा ।।
दियो हुलसि ब्रह्मर्षि भूप को आशिष पूजै कामा ।
बैठि सहानुज सिंहासन महँ कह विदेह वर वानी ।।
निमि कुल कियो पवित्र राजमणि करिकै कृपा महानी ।
दो०-असकहि मणि माला विमल, गलमेल्यो मिथिलेश ।
कह्यो जोरि कर सो करै जो अब होय निदेश ।।
उठयो फेरि कुशकेतु तहँ, लक्ष्मीनिधि हरषाय ।
रत्न माल रघुकुल जनन सवन दियो पहिराय ।।

### वशिष्ठजी के वचन

ताते एक बात अवभाखहु जो जानहुँ मत मोरा ।
पैहो परम अनंद भूपवर जगै शुयरा जग तोरा ।।
विरजहिं शुक्ला सीता कन्या राम ब्याह सो होई।
ब्याहो लखनहिं सुता दूसरी लहै हर्ष सब कोई ।।
समकुल समविभूति समकीरति समरति धर्म समाना ।
रघुकुल निमिकुल सरिस आदि जग कहौ कौनकुल आना
यहि विधि सुनि वशिष्ठ की वाणी सकल सभासद हरषे।
देव दुन्दुभी दियो मगन महँ सुमन विविध विधि वरषे ।।
सुनि मिथिलेश वशिष्ठ वचन पर पुलकित दृग जलछायो
जोरि पानि पंकज वशिष्ठके पद पंकज शिर नायो ।।

धन्य भयो सुनि तब मुखते यह निमि रघुबंश बखाना।
रघुकुल समकुल कौन दूसरो जान अजानहुँ जाना॥

श्रीविश्वामित्रजी बचन चारो भाईके विवाहकी चरचा करना

अवसर जानि कह्यो कौशिक तब बचन हिये हरषाई।
निमिकुल रघुकुल दोउ अति पावन महिमा कही न जाई।
नहि समान दोउ कुल सम दूसर परै प्रत्यक्ष दिखाई॥

दो०-धन्य धन्य निमिकुल अहै, जहँ दायक उपदेश।
विश्वामित्र बशिष्ठ हैं, तहै नहि लेश कलेश॥

छ०-यह समान सम्बन्ध धर्म युत दोउ कुल दोउ अनुरुपा।
निमिकुल ते अब अधिक और कुल अवधनाथ कहँ पैहैं।
तैसेहिं अब मिथिलेश महीपति रघुकुल तजि कहँ जैहैं॥
ताते मोर विचार होत अस कुशध्वज युगल कुमारी।
होय विवाह भरत रिपुहन को अनुमति यही हमारी॥
तुब अनुरूप अनूप विश्वमहँ दशरथ भूप कुमारा।
निरखत जिनको लोकपाल सब मानत हियसें हारा॥
ताते अनुजन ब्यहि देहु नृप दोउ कुशकेतु कुमारी।
करहू चारिहु राजकुमारन सम्बन्धी शुभ कारी॥
दूलह चारि-चारि दुलहिन नृप निरखि जनक पुरवासी
रघुकुल निमिकुल धन्य होइगो हमहु लहत सुखरासी।
ऐसो अहै बिचार हमारो पुनि जस तुव मन माहीं॥
तुम सम सुमति कवहूँ नहिं जगमें समयचूकि पछिताहीं

सुनि कौशिक के बचन सभासद मुनिजन अति हरषाने ।
साधु-साधु सब कहैं गाधि सुत मुनिवर उचित बखाने ।।
सुनत जनक पुलकित तनु हर्षित भरि आनँद जलनयना ।
नाय चरण शिर जोरि कंजकहुँ कौशिक सो कह बयना ।।
तुम सम हैना लख्योन नयना मति अपना सुख दैना ।
अब मोहि भयना चित्तमय चैना का मम सुकृत उदैना ।।
मिथिलापति के कहत बचन अस सभामध्य इकबारा ।
परिजन पुरजन गुरुजन सज्जन कीन्हो जय जयकारा ।।
पुनि विदेह सो कह बशिष्ठ है तहँ नहि लेश कलेश ।।

दो०-धन्य धन्य मोरी भई, मुनिवर चारि कुमारी ।
पायो वर त्रैयलोकवर, निज निज वपु अनुहारि ।।

छ०-फैलि भई यह बात सकल पुर परसो राम विवाहू ।
जहँ तहँ यूथ यूथ जुरि जुरि नर नारि करै सब काहू ।
यह सम्बध महासुखदायक जनक सुकृति वैदेही ।
दशरथ सुकृत रूप रघुनन्दन अपर कौन समदेही ।।
पूरब हमहुँ पुण्य बहु कीन्हो भये जनक पुरवासी ।
देखे नयनन सो राम ब्याह अब देखव आनंद रासी ।।
बारहि बार बिलोकन रामहि लेव विलोचन लाहू ।
घर-घर राम निमन्त्रण होई अनुपम सुख सब काहू ।।
कोउ कह मैं अबहीं सुन्यो, भूपति मंदिर माह ।
होयहै चारहु कुँवरि को, चारहुँ कुवर बिवाह ।।

## श्रीमिथिलेशजी युगल मुनि से वार्ता

बैठहुँ युगल राज सिंहासन युगल मुनीश कृपाला।
मिथिला अवधराज तुम्हरी दोउ तुमहीं अहै भुवाला।
जैसो दशरथ को मिथिलापुर तस कौशलपुर मोरा।
कुछ नहिं भेदहिं जानिय मुनिवर तहिं कुछ करो निहोरा।
नहि संदेह प्रभुत्व मोहि कछु तब पद शीश हमारे।
मन भावै सो करहु नाथ दोउजस अभिलाष तिहारे।
यहि विधि तिहि समाज महँ आनंद छाय रह्यो मिति नाहीं
हुलसि अवधपति जोरि कंजकर कह्यो जनक नृप काहीं॥
गुण सागर नागर यश आगर मिथिलेश्वर दोउ भाईं।
कियो महासत्कार मुनिन अस कौन करे नृप राईं॥
राज समाज रावरे करते लहे परम सत्कारा।
देहु रजाय जाहिं जनवासे वर्णत सुयश तुम्हारा॥
विश्वामित्र बशिष्ठ कह्यो तब तुम अस करहु विदेहू।
हम सबको अपने वश कीन्हयो पाश पसारि सनेहू॥
कौशल नाथ संग जनवासे हमहूँ करब पयाना।
करवेहों चारिहुँ कुमारन विविध सविधि गोदाना॥
अभ्युदायिक करवाय श्राद्ध विधि सब विवाह के चारा
कृति तेल गायन करवहैं ब्याह विधान अपारा॥
सुनि वर बचन रचन दशरथ के सुनि मिथिलेश सुजाना।
जस अभिलाषित होय कीजे तस कारज अवशि बिचारे॥

भयो प्रेम बस कह्यो कौन विधि इतते राउर नाना ।
उठ्यो अवधपति लै समाज सब उभय मुनिश सिधारे ।
करि कौशिक वशिष्ठ कहँ आगे चल्यो राम जनवासे ।
सकल राजवंशि मंत्री भट मगन हिय हुलासे ।
फहरात चले निशान बहुबाजन विविध विधान ।
देखतपुर जन भनत यश यहि समकिमि मघवान ।
जनवासे आये कौशलपति बैठे मन्दिर माही ।
विश्वामित्र बशिष्ठ बोलि तहँ विनै करिति न पाही ।
अभ्युदायिक प्रभु श्राद्ध करावहु अब न लगा बहु देरी ।
जो कछु कारज होय बतावहु सेवकगु निगति मेरी ।
गुरु वशिष्ठ अरु गाधि तनय तब विधिवत श्राद्ध कराये ।
अवधपति अरु मिथिलापति मान्यो मोद धनेरो ।
निमिकुल रघुकुल सकल सभासद परिजन पुरजन जेते ।
रामलखन उछाह लग्न सुनि भये प्रमुदित सुनि तेते ।
कियो विदेह विनय दशरथ सो पितर श्राद्ध करि लिजै ।
पुनि गौ दान कराय कुमारन ब्याह विधान करिजै ।
प्रथम व्याह की कृत्य जो लौकिक वैदिक होय ।
सो सब शुभ दिन शुभ धरी नृपहि सुनायो सोय ।
जीवन लाहु इहै तिन्ह जाना । भजै आस तजि कृपा निधाना
यहि बिधि विते दिवश अनुकूला । आयो अनहन मंगल मूला ।
लगन सोध ब्रह्मा शुभ कीन्हा । नारद करहिं पठाय सो दीन्हा ।
यहाँ जोतिषी जनक भुवारा । शुभ ग्रह शोध लगन निरधारा

युगल शोध सब भाँति सुहाये। एकहिं मिले न कछु अलगाये।
विधि सम ज्ञान ज्योतिषन केरा। कहहिं लोग नहिं थोरेहुँफेरा
होय विवाह उत्तरा फाल गुनि, यह संमत सब केरी।
दो०-प्रथम व्याह की कृत्य जो, लौकिक वैदिक होय।
सो सब शुभ दिन शुभघरी, नृपहिं सुनाये सोय ॥

## ❀ विवाह प्रकरण प्रारम्भ ❀

॥ छन्द ॥

गुरु वशिष्ठ गौदान करन को, सविधि अरंभ कराये।
सुवरण शृंगन सहित बच्छरा कनक दोहिनी नारे।
परे दुशाले पीठन में जिन रजत खुरी छबि बारे॥
पयस्रवनी निरखत मनहरनी बहुबरनी शुभशीला।
ऐसी चार लाख सुरभीं तहँ मँगवायोइव लीला॥
लक्ष लक्ष मुद्रा हेमहिं पुनि तिन दक्षिणा दिवायो।
लाख लाख सुरभी इक इक सुत करते दान करायो।
याचक भये अयाचक जग के किये बिप्र जयकारा।
धर्म ध्वजा फहरात भूप को बिदित सकल संसारा॥
अमित असंख्य वराती साथा। नृपसम सबै तिरहुत नाथा॥
नित प्रति सकल बरातिन डेरा। जाइ हेतु अति साँझ सबेरा॥
निजगुण सब कहँबश करिलीने। सहित अवधपति भये अधीने

॥ फलदान पठाना ॥

जनक प्रथम फलदान पठावा। भूषण बसन मनीवहु लावा॥
रत्न गथित वर बसन सुरंगा। कोटि मुकुट अंगद वहुरंगा॥

सब प्रकार धन लिये कुमारा । सतानन्द सह हर्ष अपारा ।।

।। फलदान तिलक चढ़ावन ।।

जाइ दीन्ह दशरथ नृप काहीं । महामोद कीन्हों मन माहीं ।।
भो फलदान रामकर टीका । भयेउ महाउत्सव अतिनीका ।।
तिलक समय बरसहिं सुर फूला । बजत दुंदुभी आनन्द मूला ।
गावहिं गान अवध पुरनारी । प्रेम मगन सिगरी महतारी ।।
विविध बाद्य धुनि चहुँ दिशि गूजै । जय जय शोर आससबपुजै
वेदमंत्र मुनिवर बहु पढ़हीं । गुरु वशिष्ट मने मनहिं उभगहीं ।
दो०-विविध दान दशरथ दिये, भये प्रसन्न सुविप्र ।
सकल अशीषहिं प्रेम भरि, जय जय कहि बहुविप्र ।

।। कलश स्थापन ।।

दशरथ विविध कीन्ह पहुनाई । सुभ घटिका महँ कलश धराई
जुरे सभा महँ महिप अपारा । सजे महाछवि राजकुमारा ।।
फूलि जननिन अंग समाई । चौकन चौके चार पुराई ।।
गणपति देव पितर गुरु पूजे । कहैं प्रसन्न अधिक अब हूजे ।।
किये कुलनेग चलो जिमिआवा । लगन पत्र सिसुकरन धरावा
इन रघुनन्दन धनुष चढ़ाये । ये सुगीत युवती मिलि गाये ।।
दियै चहिय सौं सब कहँ दीना । दिये असंख्य करन कीना ।।
सूवासिन कहँ वांछित दयऊ । नृत्य गीत बड़ मंगल भयऊ ।।
दो०-विप्र सुजाती सुहृद जन, सतानन्द सुनि साथ ।
असन अमिय सम सबन कौ, करवाये नर नाथ ।।

॥ तेल चढ़ावन ॥

दो०-निसि में कौशिल्या जननि, सकल सुभागिनि जुक्त।
रघुनन्दन को गान करि, तेल चढ़ावन सुयुक्त॥
तिमि सब उमा रमा ब्रह्मानी। प्रेम छके केहुँ नाहि पिछानी॥
सहज सचिक्कन सहज सनेही। सहज मनोहर सब महँ देही॥
तेल चढ़ै शोभा बहुऔरे। देखति बाला लालन कौरे॥
प्रसूजतन करि दीठि बरावैं। चारहु पुत्रन की वलि जावैं॥
पूजन गौरी गणेश करायो। ते निज रूप प्रत्यक्ष दिखायो॥
पूजन लेन ब्याज सब देवा। आवहिं करन राम की सेवा॥
करि वाचन पुण्याह सुखारी। लियो बोलि द्विज पंचकुमारी।
निकट पुरट घट चटपटधरिकै। सदल सदीप अमल जलभरिकै
नवल पीत पट भूषण नाना। विप्रकुमारी करि परिधाना॥
लै हरदी दुर्वा तेहिं बेला। नृपसुत लगी चढ़ावन तेला॥
बैठे बरोबर चारो भ्राता। निरखत जननी सुखन समाता॥
जस जस ब्याह कृत्य तहँ होती। तसतस तिनतन लाज उदोती
दो०-तेल चढ़ावहिं कौशिल्या, रघुनन्दनहिं निहारि।
तकि तकि छवि छकि छकि रहैं, जकी मातु बलिहारि।
दुव नृप गृहन ब्याह के चारा। होइ इतै उत एकहिं बारा॥
देखन के लालस मन भीने। द्वै द्वै रूप देव तिय कीने॥

श्री किशोरी जी आदि का

जनक सविधी नेग सब साधे। देव पितर कुल इष्ट अराधे॥
कान्ति मती जुत रानि सुनैना। करै वंश व्यवहार सुचैना॥

कुल गुरु तियन पूछि विधि लेही । उचित कराये बड़प्पन देहीं
फूली फिरहिं सुवासिनि बामा । लखहिं कुतूहल तजिगृहकामा
दो०-सीतादिक सुकुमारिन, थित करि श्रीपति धाम ।
तेल चढ़ाव सुभगिनिन, करि करि गान ललाम ।।
यहि विधि जनक सुनैना रानी सीताहिं भगिनि समेतू ।
तेल चढ़ाय पाय आनँद अति, पुनि बैठाय निकेतू ।।

।। गौदान ।।

चार लक्ष सुरभी सालंकृत, चारि कुँवरि कर तेरे ।
दीन्हयो दान दिवाय द्विजन को शतानन्द के प्रेरे ।।
पुनि वशिष्ठ कौशिक विदेह ढिग कही मनोहर बानी ।
सकल चार ह्वै गयउ उभय दिशि,रह्यो ब्याह सुखखानी

।। मण्डप रचना वर्णन ।।

शुक्ल तीज को मंडप छायो । सरल खंभ दीपक थल भायो ।।
पंच सुपल्लव लसत विशाला । बाँधी चहुँदिशि वन्दन माला ।।
अजिर विस्तार राउर माहीं । रचना कहत बनै जिमि नाहीं ।
शिल्प कर्म अति निपुन पुमाना ।तिनने रची रुचिर सोविताना
ता महँ मंजुल मंडप रोपा । कनक कदलि तंत्र सरोपा ।।
नाना रत्न सरोज बनाये । पर्ण वल्ली बनक लगाये ।।
हरित मणिनदलनाल विशाला । फलमणि हरित पीतबहुलाला
लाल पीत सित नील मणी के । सुमन बने सुभ सोभधनी के ।।
दो०-पीत पनन पंनान के, रचे बने जुत पर्न ।
चिक्कन सरल सुहावने, मोहन अन्तह कर्न ।।

नागलता फल दलन उछिनी । सब विधि सम सुबरनमय कीनी
झूलै तिन बंधन बहु श्रेणी । माला मुक्तन की छवि देनी ॥
बहु रतननमय कमल सुलसही । पुंडरीक हीरकमय करही ॥
इन्दीवर नीलकमल महँ हेरे । बनै कोकनद मानिक केरे ॥
पुष्पराज के बने सरोजा । पत्र सुपंनन कलित पिरोजा ॥
इन्द्र नील के असित बिहारै । लागे करन मधुर गुँजारै ॥
मरकत रचित रसाल दली के । लगे सुतोरन भाँति भली के ॥
कंचन कोरन नीलम सोहैं । सूक्ष्म ग्रंथि सुरेशम पोहै ॥
कंचन कलश धरी प्रतिद्वारे । धरि उत सब विधि सब उपहारे

दो०-प्रतिमा इन्द्रादि देवकी, बनी सुखंभन माहँ ।
लिये सुमंगल बस्तु को, लेहु चहिय जो जाहँ ॥

धरे रत्न दीपक प्रति ठामा । रहैं एक दुति दिवश त्रियामा ।
चार प्रधान खंब छबि राशी । तामहँ रचे राखि अवकाशी ॥
गणपति हरि रविहर गवरी के । थित किय पंच मूरतै नीके ॥
सुकसारो पिकमोर रसाला । लसै चित्रप्रति पुतरिन वाला ॥
वेदी विविध द्विजन बनवाई । जे जेहि दिसन वेद महँ गाई ॥
मंगल कलश धरे सविधाना । पुरे रुचिर स्वस्तिक तहँ नाना ।
जेहि दुलहिन सीता शुभरूपा । तिहिछबिकिमिकहिजाय अनूपा
दूलह राम विवाहन आहीं । विदित सुमंडप तिहुँपुर माहीं ।

छ०–त्रिभुवन विदित मंडप सुतंत्र सुपीठि थितकर जानकी ।
भगिनीनि रयौं रमनीनि रजनी अर्पिविधि किय मानकी।

तन तप्त स्वर्ण समान तिन महँ वोय हरदी कहँ बढ़ी ।
श्रीसाक्षात् परन्तु ब्याह विशेष श्री औरे चढ़ी ।।
सो०-थापे देव गणेश, जे विवाह हित कलश महँ ।
मेटन सकल कलेश गणेश, पुजवाये सविधान तहँ ।
दो०-परिक्रमा सो विनायक की, सिय को चहैं कराव ।
उदवर्तन करि कुल तियन, शुभ शृंगार बनाव ।।

।। श्रीकमला पूजन ।।

गुहि सुमना सुमनन की श्रेनी । रची सरतन सुचिक्कन बेनी ।।
भरि सीमंत सिन्दूर ललामा । चूड़ा रतन गहौ अभिरामा ।।
भाल लाल मुक्ता बहुसाजे । नाना करना भरन विराजे ।।
नाना भूषण में दुति होती । लगे अमोल सजल ससि गोती ।।
विविध कंठ भूपेन छवि जाला । उज्ज्वल चन्द्रहार मणिमाला
भुज अंगद केयूर अनूपा । पहुचिन में कंकन बहु रूपा ।।
कर अँगुरिन मुदरी दुतिकारी । कटि में कल किंकिन झनकारी
पैंजेव नूपुरादि विधि ऐही । पादप कटक हंसक छबि देही ।।
दो०-हेमततु गुफित बिपुल, नाना भाँति अमोल ।
सुन्दर सभय प्रमाण के, पहिराये सुनिचोल ।।
दशद्वै अति आभूषण नीके । शोभित होत भये तन सीके ।।
रुचिर चार चौडोल सुहाये । नाना मनि मंडित छबि छाये ।
उर्मिलादिकन जुत समसाजी । जनकनन्दिनी तिनहिं विराजी
विविध सुखासन चढ़ि सब रानी । भई संगसब सखिय सयानी
सुवासिनी पुरकी वर नारी । गावत मंगल गीत सिधारी ।।

सुपन मनि मानिक उजियारे। चले कपूर सलाकन वारे ॥
बाजे बजेन पाइया पारा। देखत बनी सुछवि तिहिबारा ॥
दई सुदक्षिण दुर्गहिं फेरी। आइ बरातिन हूँ तहँ हेरी ॥
दो०-जाइ निकट सिर नाय सबै, भाव सहित गोहराइ।
कमला झट प्रगटत भई, आशिष दइ जय छाइ ॥
चारों कुंअरि विधि पूजेऊ, मन भावत वरपाई।
अति आनन्द सप्रेम सों, सखिन सहित घर आइ ॥

॥ श्री रामलला नहछू ॥

आदि शारदा गनपति गौरि मनाइय हो।
रामलला कर नहछू गाइ सुनाइय हो ॥
जेंहि गाये सिधि होय परमनिधि पाइय हो।
कोटि जनमकर पातक दूर सो जाइय हो ॥
कोटिन बाजन बाजहिं आज जनकपुर हो।
देवकोक सब देखहिं आनन्द हिय अति हो ॥
नगर सोहावन लागत बरनि न जातै हो।
कौसल्या के हरष न हृदय समातै हो ॥
आलहिं बाँस के माँडव मनिगन पूरन हो।
मोतिन झालर लागि चहूँ दिसि झूलन हो ॥
गंगा कमला जलकर कलस तौ तुरित मँगाइय हो।
जुवतिन्ह मंगल गाइ राम अन्हवाइय हो ॥
गजमुकुता हीरा मनि चौक पुराइय हो।
देइ सुअरध राम कहँ लेइ बैठाइय हो ॥

कनक खंभ चहुँ ओर मध्य सिंहासन हो।
मानिक दीप बराय बैठि तेहिं आसन हो ॥
बनि बनि आवति नारि जानि गृह भायन हो।
विहँसत आउ लोहारिन हाथ बरायन हो ॥
अहिरिन हाथ दहेड़ी सगुन लेइ आवइ हो।
उनरत जोवनु देखि नृपति मन भावइ हो ॥
रूप सलोनि तँबोलिन वीरा हाथहिं हो।
जाकी ओर बिलोकहि मनतेहिं साथहिं हो ॥
दरजिनि गोरेगात लिहे कर जोरा हो।
केसनि परम लगाइ सुगंधन बोरा हो ॥
मोचिनि वदन संकोचिनि हीरा माँगन हो।
पनहिं लिये कर सोभित सुन्दर आँगन हो ॥
बतिया सुघर मलिनिया सुन्दर गातहिं हो।
कनक रतनमय मौर लिये मुसुकातहिं हो ॥
कटि कै छीन बरिनियाँ छाता पानिहिं हो।
चन्द्रवदनि मृगलोचनि सब रसखानिहिं हो ॥
नैन विशाल नउनियाँ भौं चमकावइ हो।
देइ गारि रनिवासहिं प्रमुदित गावहिं हो ॥
कौशिल्या कइ जेठि दीन्ह अनुसासन हो।
नहछू जाइ करावहु बैठि सिंहासन हो ॥
गोद लिहे कौशिल्या बैठी रामहिं वर हो।
सोभित दूलह राम सीस पर आँचर हो ॥

नाउनि अति गुन खानि तौ बेगि बोलाई हो।
करि सिंगार अति लोनि तौ विहँसति आई हो॥
कनक चुनिन सो लसित नहरनी लिये कर हो।
आनँद हियन समाइ देखि रामहिं वर हो॥
कानन कनक तरीवन वेसरि सोहाइ हो।
गज मुकुता करहार कंठ मन मोहइ हो॥
कर कंकन कति किंकिन नूपुर बाजइ हो।
रानि कै दीन्ही सारी अधिक विराजइ हो॥
काहे राम जिउ साँवर, लछिमन गोर हो।
कीदुहुँ रानि कौसिलहिं परिगा भोर हो॥
राम अहहिं दशरथ कै लछिमन आन कहो।
भरत शत्रुहन भाइ तौ श्रीरघुनाथ कहो॥
आजु जनकपुर आनँद नहछू रामक हो।
चलहु नयन भरि देखिय सोभाधाम कहो॥
अति बड़भाग नउनियाँ छुए नख हाथ सो हो।
नैनन्हि करति गुमान तौ श्रीरघुनाथ सो हो॥
जो पगु नाउनि धोवइ राम धोवावइ हो।
सो पगधूरि सिद्ध मुनि दरसन पावइ हो॥
अतिसय पुहुपक माल राम उर सोहइ हो।
तिरछी चितवन आनँद मुनि मुख जोहइ हो॥
नख काटत मुसुकाहिं वरनि नहिं जातहि हो।
पदुम राग मनि मानहुँ कोमल गातहिं हो॥

प्रभु कर चरण पछालि तौ अति सुकुमारी हो ।
जावक रचति अँगुरियन्ह मृदुल सुढारी हो ।।
भई निछावार बहुविधि सो जस लायक हो ।
तुलसिदास बलि जाउँ देखि रघुनायक हो ।।
राजन्ह दीन्हें हाथी रानिन्ह हार हो ।
भरिगे रतन पदारथ सूप हजार हो ।।
भरि गाड़ी निछावरि नाऊ लावइ हो ।
परिजन करहिं निहाल असीसत आवइ हो ।।
तापर करहिं सुमौज बहुत दुख खोवहिं हो ।
होइ सुखी सब लोग अधिक सुख सोवहिं हो ।।
गावहिं सब रनिवास देहिं प्रभु गारी हो ।
रामलला सकुचाहिं देखि महतारी हो ।।
हिलिमिलि करत सवाँग सभा रसकेली हो ।
नाउनि मन हरषइ सुगंध मेलि हो ।।
दूलह के महतारि देखि मन हरषाइ हो ।
कोटिन्ह दीन्हेउ दान मेघजनु बरखइ हो ।।
रामलला कर नहछू अतिसुख गाइय हो ।
जेहिं गाये सिधि होय परम निधि पाइय हो ।।
दशरथ राउ सिंहासन बैठि बिराजहिँ हो ।
तुलसिदास बलि जाहिं देखि रघुराजहिं हो ।।
जे यह नहछू गावइ गाइ सुनावइँ हो ।
रिद्धि सिद्धि कल्यान मुकुति नर पावइँ हो ।।

सजि सिंगारहिं नापित वारी। मनहु मनोज वधू छविवारी॥
सज्जन बचन सुनत तिहिकाला। मज्जनकीन चारि रघुलाला
युगल पीत पट अम्बर धारे। बैठे कनक पिठन छविवारे॥
युग श्यामल युगगौर कुमारा। हँसीकरन लखि कियो बिचारा
तिनमहँ चतुर एक छवि छाई। करि कटाक्ष बोले मुसुकाई॥
दूलह जेठ कौन सिय केरे। पहिचानन चाहत चित मेरे॥

॥ नहछू श्रीकिशोरीजी का ॥

अब गवनहु जहँ राजकुमारी। करिहौं चढ़न चढ़ाव तैयारी॥
असकहिंसीता निकट सिधारयो। रानि सुनैना बचन उचारयो
चारिहु भगिनिन केर सुखदानी। चढ़ै चढ़ाउआशु महरानी॥
रानी सुनैना सुनि सुख पाई। भगिनि सहित सीतहिं नहवाई।
रत्न ग्रंथित अंबर पहिराई। चितै चौंध चख गईं समाई॥
कनक पीठ सीतहिं बैठाई। मनिन जटित भूषण पहिराई॥
नख छोरन नखमाहिं छुआई। नाउनि तहँ कोपर लै आई॥
जे पद लाल प्रवालहु तेरे। शिव अज उर पुर करत बसेरे॥
ते पद महँ नाउनि बड़ भागिनि। जावक लगी देन अनुरागिनि
दो०-अमर जतन करि जन्म बहु, लहै न जिन पद रेनु।
ते पद नाउनि कर लसत, निजजन के सुरधेनु॥
चितवत चारु चरण अरुनाई। नाउनि जावक देन भुलाई॥
जगमहँ जिनका जोवति योगी। किये महा उरनख संभोगी॥
जावक सहित लसत नख कैसे। उदित अमित अंगारक जैसे।

इन्द्र नीलमणि नूपुर भाये । मनो कमल बहुषट पद आये ।।
लघु अँगुरिन मुंदरी सुहाहीं । कंज कोश मनु रवि परछाही ।।
तेइ पुनिनखननिकटछवि देहीं। धरयो परिधि जनुशशिनभनेही
सिय अँगुरिन लखि कोमलताई। नवरसाल दल रहत लजाई ।
सिय पदसम सरि करन सरोजू । सहि आतप तप ठानत रोजू।
जब न भयों सिय चरण समाना । तब झारत केशर दल नाना
चह्यो नखत पति नख समताई । ताते विधि कालिमा लगाई ।
गुल्फसुल्फ छविकविजन कहहीं।नहिं गुलाब कलिकासमलहहीं
धोये चरण जलज जेहि थारा । भो जोहत जावक अनुरागा ।।
दो०-जिन पद लेस कृपा करत, पावत देव विभूति ।
ते धोवत अपने करनि, धनि नाउनि करतूति ।।
नहछू चारु मातु करवाई । भूषण वसन विमल पहिराई ।।
पुरट पीठ पुनि भगिनि समेतू । बैठाई सिय सजनि निकेतू ।।

श्री सतानन्द जी का विवाह मुहूर्त सुनाने

।। छन्द चौबोला ।।

ताही समय जनक पठवायो सतानन्द मुनि तब आयो ।
उठि आसन दीन्ह्यो सुअवधपति चरण कमल शिरनायो ।
विश्वामित्र वशिष्ठ आदि मुनि मण्डल भूप बुलायो ।
यथा योग्य आसन बैठायो दे सबको बारबार शिरनायो ।
गौतम तनय कह्यो भूपति सो विनती क्रियो विदेहू ।
बीते चारि दंड दामिनि के ब्याह लग्न मुनि लेहू ।

गो धूली वेला महँ ह्वै हैं, कालिह द्वार को चारा।
महाराज लै चार कुमारन करै पवित्र अगारा।

॥ विवाह के लिये बस्तु संचय करना ॥

दोउ ब्रह्म रिषी बशिष्ठ गाधिसुत सहित जनक पहँ जाहू।
वेद विधान साज सब साजहु जस भाखै मुनि नाहू॥
सुनिके सतानन्द सानन्दित लै रघुकुल गुरु संगा।
विश्वामित्र समेत चल्यो तहँ रग्यो प्रीति के रंगा॥
मुनिवर जाय जनक मन्दिर महँ पाय परम सत्कारा।
साजे सकल ब्याह सामग्री जस विधि वेद उचारा॥
कञ्चन कलस धरे प्रतिद्वारा। धरि उत सबविधि सब उपहारा
ब्रह्मदास मणि हेम जगाये। सरल खंभ दीपक थैल भाये॥
प्रति देवन के पूजन काजे। वेदी बनी स्वर्णमय राजे॥
तिन मंडपहिं कुमारन ल्याई। तियन मंगलिक रुचिर चढ़ाई।
सो०-नृप राउर तिय बृन्द, गावहिं क्रीड़हि अभिलाषत।
छन छन प्रति आनन्द, उमगत दसदिशि ये तहाँ॥

बराती सूचना

सुनत सुमन्त तुरन्त हजारन परिचारन बुलबायो।
डेरन डेरन रघुबंशिन्ह के शासन संवाद पठायो॥
आवै आज पहर दिन बाकी सजी समाजहिं सारा।
सजैं मत्त मत्तंग तुरंगहु पैदर सुख पै अपारा॥
धावन धाय पुकारन लागे जस सुमन्त कहि दीने।
आवन लगे बराती सजिसजि सक्र सरिस सुख भीने॥

एक ओर बाजिन की राजी एक ओर गज बृन्द ।
एक ओर रथ के गथ पथमहँ पैदर खड़े सानन्दा ॥
नौबत झरन लगी चारोदिशि बाजे विविध नगारे ।
हिनहिनात हयवर छहराते घण्टा शंख अपारे ॥
दो०-औरहुँ बाजन बाजतभे मच्यो सुहान शोर ।
चढ़े विमानन देखहीं बरषै सुमन चहुँ ओर ॥

॥ दूलह श्रृंगार ॥

श्रीरंगहि पोशाक छुवाई । ल्याये सचिव निदेशहिं पाई ॥
प्रथम पूज्य वर्गन पहिरावा । दयौं अपन नेगिन मनभावा ॥
रिषय शृंग अपनौ हित साधी । शुभ उसनीव रामसिर बाँधी।
पीत सुरंग दियो पहिराय चमाचम चारु मनोहर वागो ।
मंडित मोतिन जाल विशाल बिचै बिच हीरन को शुभलागो ।
कटि में पटुका छविछाय रह्यो क्षिती छवि छोरन की छहरै ।
नव नूपुर ते पद पंकज में रघुराज भजे भवशोक हरै ॥
हीरक कटनकर में चटक हीरन छटा छूटै घनी ।
नवरत्न अंगद बाहुमूल अतूल बिचबिच बहुमानी ।
मानिक सुपन्ना पदिक मोतिन जाल सोहत सेहरा ।
मनमीन फाँसन हेतु मनुमनसिज रच्यो कलसेहरा ।
कंचुक राह दार जरतारी । टकी सूरत्नन रुचिर किनारी ॥
स्वर्ण तन्तुमय रचन दुकूला । कटिकर वस्त्र स्वर्णमय फूला ॥
पनरथ कलित सीपनव बृन्दन । लसे उपानह पदजग बन्दन ॥
सर्वाभरन रत्नमय राजै । लखत वनत नख सिख तिनकाजै ।

जेहि भाति वरणउ वषण भुषन राम विवाह श्रृंगार को।
मात कौशल्या रुचिर कजल दृगन देती भई।
निज पाणि राई लोन बारन उतारी पावक में दई।
वरन रोचन तिलक रूचिर सुवासिनिन रूचिसौं करो।
प्रतिकलित रत्न सुवर्णमय असमौर माथे पर धरौ ।।
अति धन्य रबिकुल नाउनि जिन पंकजपग जावक दियौ।
श्रीशरण कहि इहि भाँति समश्रृंगार सब भाइन कियौ।
जेहिं भांति साज्यो वसन भूषन रामविवाह श्रृंगार को।
तेहि भाँति तीनहुँ बन्धु भूषेण साजी श्रृगार सुभाइ को।
केकि कंठ द्रति स्यामल अंग। तड़ित विनिंदक वसन सुरंग।
ब्याह विभुषव विविध बनाए। मंगल सब सब भाँति सुहाए।।
सरद विमल विधु वदन सुहावन। नयननवल राजीव लजावन
सकल अलौकिक सुन्दरताई। कहि न जाइ मनही मन भाई।।
नख शिख दुलह वेश बनाई। मौर बाँधि स्वासिन सुख पाई।।
अनुपम दुलह वेश सुहायो। कोटिकाम कमनीय लजायो ।।
दो०-देखि मातु प्रमुदित भई, नयनन फल गुनि लीन।
दूलह रतनन पालकी, पधरायो सुख भीन ।।
कौशिल्या गुरु पतनि युत, दियो दिठौना चारु।
आरति करहीं सलक मिलि, राई लोन उतारु ।।
आये सज़ि बाजी भलो, को छबि बरनि सिराइ।
चढ़े तिनहिं रघुवंश मणि, गुरु चरनन सिरनाइ ।।

कौशल्या महारानी गुरुपतनि मुख्य कहँ दीन्हो दीठोन ।
सवगोत निन युत आनी नीराजन किये मुदित मन ।

### राजा दशरथ जी के सिगार

उत भूप पहिरयो पीतपट दीन्यो मुकुट पोखराज कों ।
पोखराज केउर हरजामा जरकशी सुखताज को ।।
कटि कसो पटुका पीत माला पहिरि पीत प्रसून को ।
मिथिलेश को समधी सज्यो सुख दून देखत सुवन को ।।
पंच धुनि अब होवन लगी । परिक्षन मातु करहिं अनुरागी ।।
आरति कीन्ह करी विधिलोका । चूमि वदन पढ़ि मंगलओका
लहि अशीस रघुवर नर जाना । आये जहाँ बराती नाना ।।
पेखन दूलह वेष वराती । प्रेम पगे हुलसत मन माती ।।
चढ़े तिनहि रघुवंश मणि । गुरु चरनन सिरनाय ।।
धरि धीरज नृप अयेसु दीन्हा । चढ़ि चेले रघुवंशमणि तिन्हा
दुलह रघुवर अश्योहि पधारे । देखि देखि सब भये सुखारे ।।
परम दिब्य हयरसिकविराजे । अमित सुर्यजेहि लखतहि लाजे
चमचम चमकत मेरु समाना । देखत लाजहि देव विमाना ।।
बैठक उच्च हयन पर सोहै । छत्र चमर हलरत मन मोहै ।।
शुभग सुचंचल अनुप हय । नख शिख भुषन धारय ।।
सो०-श्याम करन पर अस वारतेही, सिन्धुर अश्व लखिहारी ।
दशरथ राजै वर गजहि, ऐरावत जन ईन्द्र ।
सुचिकर सोहै सुरुचिर रथहि, कुल गुरु सहित मुनिन्द्रा ।

## ॥ बरात चलना ॥

बजी दुंदुभी दिग धुनि छाई। सिमिट चली सुन्दर कटकाई ॥
भरत शत्रुहन लछिमनलाला। चढ़े अश्व मनमोहन वाला ॥
सकल बराती रुचि अनुसारी। चढ़ि चढ़ि जानहिं चलेसुखारी।
पदचर अमित संग मह सोहैं। वनी बरात मदन मन मोहैं ॥
गुरु अनुशासन पाइ महीपा। शंख बजाइ चले कुलदीपा ॥
विविध वाद्यवत देहिं सुनाई। वरषहि सुमन देव समुदाई ॥
आगे बढ़े दुरद ध्वजधारी। ध्वजमत्त हय बहुते छवि भारी ॥
बढ़ चढ़ बीर सजे तिन पाछे। चले तुरंग नचावत आछे ॥
परे सवारिनि के पुनि नाना। कढ़े चढ़े तिन सूर सुजाना ॥
जावहिं कृत्रिम वाग अनन्ता। चित्र विटप वाजिन छविवंता।
चंमन जोति समूहन केरे। चले प्रकाशित होत घनेरे ॥
केचित मनुजमुरितिपुनि याही।बने बिचित्र कहिजात सोनाहीं।
नाना कौतुक साथ बराता। जात चले रस रस हरषाता ॥
दो०-अग्नि विषय कौतुक रुचिर,मारग उचित अपार।
होत जाहिं होवहिं खुशी, देखत राजकुमार ॥
बहुतक जनरत्न कंकन धारी। राजत तिन राजी तहँ न्यारी ॥
बाजेअमित कहहिं किमिनामा। मंगलमय सब बिधिअभिरामा
देवन लखे राउ मनमाही। जात चले व्याहन सुत काँही ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिदेवा। आये शक्तिन सहसुख सेवा ॥
शेष सुरेश गणेश खड़ानन। आये देव सबै शुभ ध्यानन ॥
रघुवंशी कौमार समाजा। चलेउ जात प्रमुदित अतिभ्राजा।

अगनित वेस्त धार तिनमाहीं। देखिय प्रनति सुवोलत जाहीं।
दो०-विमानन गगन बिच, जहँ जहँ दशरथ जात।
देवहुँ तकि तहँ तहँ चलत, लखि लखि हिय हरषात॥
ऊँचे सुर जय जय करहिं, भई समय अनुकूल।
अंजुलि भरि भरि बरन पर, वरषत आवहिं फूल।
सचिव समुज्ज्वल छत्र लगाये। अचिंभृती बहु दाहिन बाये॥
मंद मंद गति बाँधि कतारे। झूमत चले गयन्द दतारे॥
तिनके पृष्ठ अवधि नरनाथा। लियै असंख्य अवनिपति साथा
उन्नत तिन छत्रन की राजी। हंशमाल समसुभग विराजी॥
पाछे सविधि क्रमेलक आली। इमि बरात पुरवीथिन चाली।
बैरख फिरयो जनकपुर के दिशि तुँग ब्योम फहरात।
बाजन बाजत बिविध भाँति के चली सुचाय बरात॥
फहरि रहे गजवर निशान बहु मुख्य निशान समाना।
सुतर सवार चले चमकत पट चटपट सोहत नाना॥
राम बन्धु युत बीच विराजित चहुँदिशि सखा सुहाये।
तिन पाछे शत्रुँजय गजपर अवधनाथ अति भाये॥
चढ़े मतंग महीप उभय दिशि गुरु अरू कौशिक राजै।
जनु ऐरावत चढ़यो पुरन्दर शुक्र बृहस्पति भ्राजैं॥
देखि देखि दशरथ को सुर मुनि कहहिं कौन असभागी।
त्रिभुवन पति को चल्यो विवाहन पुत्र प्रेम रसपागी॥
समाचार सब लोगन पाए। लागे घर घर होन बधाए॥
सुनि सब कथा लोग अनुरागे। मंग गृह गली सँबारन लागे॥

भुवन चार दस भराउछाहु । जनक सुता रघुवीर विआहु ।।
ध्वज पताक पट चामर चारु । छावा परम विचिव बजारु ।।
कनक कलस तोरन मनिजाला । हरद दुव दधि अच्छत माला
जहँतहँ जुथजुथ मिलिभामिनि । सजिननसप्तसकल दुतिदामिनि
विधु वदनी मृग सावक लोचनि । निजसरुप रतिमान विमोचनि
भुप भवन किमिजाइ बखना । विस्व विमोहन रचेउ विताना।
गावहि सुन्दरि मंगल गीता । लै लै नाम राम अरु सीता ।।
दो०-सोभा दशरथ भवन कइ, को कवि वरनै पार ।
जहाँ सकल सुर सीसमनि, राम लीन्ह अवतार ।।
मंगलमय निज निज भवन, लोगन्ह रचेवनाइ ।
बीथी सींची चतुर सम, चौके चारू पुराइ ।।

।। अगवानी लेन चले भैया जी ।।

खबर राजमन्दिर में पहुची आवति चली बराता ।
कह्यो विदेह बोलि लक्ष्मीनिधि जाहु लेन तुमताता ।
जनककुमार सुनत चढ़ि बाजी चल्यो लेन अगवानी ।
धरे पुरट घट गावत मंगल गीत सुहावन भामिनी ।।
दो०-लक्ष्मीनिधि के संग में, सोहत राजकुमार ।
छटे छबीले छविभरे, गवने पंच हजार ।।
अगवानी आई निकट, रूकिगै सकल बरात ।
लक्ष्मीनिधि बन्दन कियो, नृप पूछी कुशलात ।
सुत विदेह को नेहवश, अवधनाथ हरषाय ।
पाणि पकरि निज नागमें लीन्ह्यो चटक चढ़ाय ।।

इत उतके पुरिजन अखिल, देखत जात भलठाम ।
छोड़हिं लाजा सुमन मृदु, चढ़ी अटन पर बाम ।।
छ०—सूर्य्यास्त समय बरात प्रविशी जनकनगर सुहावनो ।
देखत बराती नगर शोभा इन्द्रनगर लजावनो ।।
फहरै पताके तुंग चहुँकित विविध रंग अनंग सों ।
तोरन कनक तड़ित जड़ित घट पुरट द्वार पतंगसों ।।
वर रंभ खंभ खड़े अनेकन द्वार द्वार विराजहीं ।
अतिशय उतंग अवास हिमगिर श्रृंग शोभ पराजही ।
सींची गली सुरभित सलिल विस्तार बृहद बजार को ।
द्रवनाधिपति सम बनिक बैठे करहिं बस्तु प्रचार को ।
शारद छटा ऊँची अटा छन छटासी युवती चढ़ी ।
अति हर्ष वर्षि प्रसून लाजावर लखन चोपहिं मढ़ी ।
आई बरात बजार महँ नर नारि दूलह देखहीं ।
दशरथ जनक अरु भाग्य अपना अधिक उरहिं उरेखहीं ।
घरघर बजत बाजन विविध मिथिलापुरी ध्वनिमयभई
देते बरातिन नारि नर करि युक्ति गारिहि रस मई ।
यहिविधि भाँति देखतनगर हाँस विलास बहुविधि करतई
मिथिला मनहर पुरिहिं सिधाई । चित चोराय दिय धूममचाई
वनरा सुभग जात पथ माही । निजवश कियो काहिधौं नाहीं ।
बड़रे छली अहेरी नयना । करत चोट हिय हुलसत पैना ।।
मुख मुसुकनि मनुफूल बिखेरी । बितरि सुवासहिं मनमतिफेरी
दुलहा स्ववशकियो चितचोरी । प्रगटि प्रभापुर खोरिन खोरी

वनरा मुख देखत सुधि भूली । प्रेम विवश भइ चित्रलिखेली ।
सोइवनि बनरा रसमयसामा । मिथिला वीथिन विहरललामा
वशी करनि चितवनि सखिडारी । मधुमुसुकनिरसरूप कियारी
बनहिंविलोकत तनितेंहि औरा । करतकसक हिय होवतबौरा
सिहरा लट लठकनि लखि आली । देखलेत मनकरत विहाली
नख शिख ब्याह विभूषण धारी । चोरत चित्त चतुर नर नारी
सुभग सुशोभितजरकसिजामा ।त्रिभुवन सुन्दर उपरनाललामा
पहिरे पियर वियहुती धोती । नीको लगत बना छवि सोती ॥

दो०-मनहर बनरा जन जनहिं, अनुपम आनन्द दीन ।
जनकलली सौभाग्य सुठि, अस प्रीत मरस भीन ॥

जनक लड़ैती सुन्दर श्यामा । पायो दूलहि मन अभिरामा ॥
तौलिये दूनहुँ धारिसुपालरी। श्याम अधिक श्यामासखि भलरी
एक कहै सखि दूलहु एका । तरकि न जावहिं किहे विवेका ॥
यहि प्रकार मिथिलापुर नारी । गगन मध्य सब सुरतियप्यारी
लखि लखि बनरा बेष सुरंगा ।कहहिं सुनहिं सब प्रीति अभंगा
सुभग बरात बनी अनुरूपा । यथा लसत दूलह सुख भूपा ॥
निमीनगर नवनारि नवेली । चढ़ी अटारिन सहित सहेली ॥
वरषहिं सुमन नवल अनुरागी । मनहर श्याम सुभग रसपागी
सुखकर श्यामहि सकल समाजा । लखत सुप्रेम विभोर विराजा
दूनहुँ ओर अधिक रस छायो । बाजत बाद्य बहुत सरसायो ॥
लूटत सुख रस सबहिं लुटावत । जात बरात सोह सुठिभावत ।

दो०-आवत जानी बरात गृह, आनन्द मच्यो महान ।
सकल बराती रस छके, हिये अमित पुलकान ।।

निकट कढ़त बनी लाजन करहीं। कोटिकाम समछवि उरधरहीं
बृद्ध जनन की लाज निवारी । नीके थिर दृग लेहिं निहारी ।।
वपु माधुर्य नयन भरि लेहीं । करि वारनै विपुल धनदेहीं ।।
अमित प्रकाश वाना मुख हेरे । उदय किये जनुचंद घनेरे ।।
लखत इकै बह सुख महसानी । गावहिं गीत सुगद गदवानी ।।
कहैं कियो विधि नै मनभावा । चिर आयुष को फल हम पावा
रूप भूप कन्यन महँ जैसे । ये सब कुँवर मनोहर तैसे ।।
समविधि समजोरी सुभकीनी । वढ़हिं परस्पर प्रीति अछीनी ।

दो०-भागवान सम्बन्ध भल, काहिन यह प्रिय लाग ।
माँगै अचंल ओड़िके, पावहिं चिर सौभाग ।।

सम रचना प्रतिभवनसुहाती । होइ चकित चित अखिलबराती
सबपुर मध्य समान उछाहू । जनु सबहीं घर होत बिआहू ।।
जेहिंजेहिं गलिन दुलहवर कढ़ही । तहँतहँ अकथनी प्रमुदबढ़ही
सुनत खबर आये इहि ठौरे । गृह गृह की जुवती उठि दौरे ।।
करहिं काम सो देहिं विहाई । एकै चढ़हिं प्रसादन जाई ।।
वातायन महँ वदन लगाई । लखहिं इकै उत्तम मधुराई ।।
जिन जिनकौं अगता सुधि होई । करि राखै मंगल विधि सोई
राजत सुवरन तुल्य शरीरा । धरै विविध रंगन बर चीरा ।।

दो०-किये सिंगार जुस प्रनव, कोविद सकल फसान ।
बाजहिं नूपुर किंकिनी, मनसिज मुखन समान ।।

## पुरनारियों का परिछन

दो०-भाग्य विभव अवधेश कर देखि देव ब्रह्मादि ।
लगे सराहन सहसमुख,जानि जन्म निजवादी।

शिव ब्रह्मादिक बिबुध बरुथा। चढ़े विमानहि नाना जुथा ।।
प्रेम पुलकतन हृदय उछाउ। चले विलोकन राम विआहु ।।
देखि जनकपुर सुर अनुरागे। निज निज लोक सबहिं लघुलागे
चितवहि चकितबिचित्र बिताना ।रचना सकलअलौकिकनाना
नगर नारि नर रुप निधाना। सुधर सुधरम सुसील सुजाना ।।
तिन्हहि देखि सब सुर सुरनारी। भए नखत अनुविधु उजिअरी
विधिहि भयउ आचरजबिसेखी। निज करनिकछु कतहुँनदेखी

दो०-सिव समुझाय देव सब, जनि आचरज भुलाहु ।
हृदय बिचारहु धरि धरि, सिय रघुबीर बिआहु ।।

सकल सराहहि विभुती पेखी। सहित तिरदेव शेषनहि लेखी।
जनकपुरि नव निरखत भागा। लजि त्रीदेवहुस्वपुर विरागा ।।
अति आचरज मय सृष्टि बनायो। सहित त्रीदेवन देखीं लजाये
शंकर देखे देव भुलाये। कहि प्रिय बचन सबहि समुझाये ।।
द्वयौ तत्व समुझि पुनि लेहु । जे श्रीपति ते राघव येहु ।।
अहहि अनंत अण्डकर नायक। सत चित आन्द सब सुख दायक
शक्ति अनंत अण्डकी कारणी। करुणामय नितस्वबस बिहरिणी
श्रीसीता तीनकर विवाहा। यह वैभव चाहव अवगाहा ।।
इनको नाम सुअंमग लहारी। दायक सहज पदारथ चारी ।।
देखिलेहु किन मोद विशाला। बड़ भागन पाइय असकाला ।।

सुनि सबके मनके भ्रमगयऊ। पुनि कौतुक देखन चित दयऊ ।।

दो०-नाथ चतुर दशभुवन के, सकल विश्व करतार।
दसरथ भुपति के सुवन, सबके प्राण अधार ।।

महत प्रेम के भार भरीसी। चलहिं मंद गति काम सरीसी ।।
गानकरत परिछन कहूँ आवहिं। निरखि नयनभरिहृदयजुड़ावहिं
थिर कराय आरती उतारै। थारन मै मोतिन भरि वारै ।।
निपुन तिलक मिस परसहि गाता ।बलिबलिजाहिं फेरिदुबहाता
वात्सल्य के भावहिं पागी। रहैं गये पर द्वारन लागीं ।।
दृष्टि लगावहिं जलग दिखाहीं। बरबस जाहिं तृप्ति लहिनाही
नरन नरन महँ सुरस हुलासा। देखत फिरहिं विचित्र तमासा
कोऊ तिनहिं पिछानहिं नाहीं। प्रेम मगन मन तन सुधि नाही
नृपहि सराहि सराहि सुजाना ।वरसहिं फूल अंजलि भरिनाना
राम रूप मोहन छवि रासी। लखहिं सुथिर शंकर अविनासी।
पन्द्रह नयन लगे अति प्यारे। हते असम प्रति वदन विचारे ।।
पल प्यालिन भरि भरि सुखपाई। पियहिं अनुपम रूप लुनाई ।।
रहो शैलजा थिर ह्वै हेरै। लिखि दीनी जनु चित्रचितेरै ।।
उभय द्रगन आपुहि गनि हीनी। लखत रूप अनिमेष प्रवीनी।
राम स्वरूप बिलोकि विधाता। बाढ़हि हरष समायन गाता।
आठ नयन की जब सुधि आवै। तब तब मनहीं मन पछतावै।

दो०-द्वादश दृगन सोषट वदन, देखहिं श्रीरघुबीर।
विधि ते तौ बड़भाग हम, अधिक न होय अधीर।

जब परंतु सुरपति तन देखहिं। तब न भाग वरदूसर लेखहिं।

कहइ परस्पर देव समाजा । आजु धन्य सब महँ सुर राजा ।।
किहि कौ अस हम सुकृति बिचारैं । सहस नयनसो राम निहारैं
प्रभुतन चितय इन्द्र मनमाना । गौतम शाप भइस वरदाना ।।
भूपति भाग्य विभूती पेखी । सहित त्रिदेव शेष नहिं लेखी ।।
सकल सराहहिं धनि धनि भूपा । अण्ड बीच इक अहैं अनूपा ।।
जनकपुरी नव निरखत भागा । लखि त्रिदेवहूँ स्वपुर विरागा ।
निमिपुर नर नारिअवलोकी । सहित नारि सब छकैं सुरोकी ।
प्राण चन्द्र लखि लखत मलीना । देवपुरी तिमि सुर सब दीना
छ०—इत्यादि चित्र बनाउ अगनित अल्प भइ बर्णन करैं ।
श्रीराम दुति सनमुख बिलोकत चित्त जुवतिन केहरैं ।
इमि राजद्वार प्रवेश लौंकित गजन क्रम-२ सौं बढ़े ।
पुनि उतरि बंधुन सहित गुरुवश सुभग घोरिन पै चढ़े ।

।। दूलह का रूप वर्णन ।।

सो०-हेरि राम कौ रूप, नख शिख ते सुन्दर अधिक ।
मोहे सुर मुनि भूप, पुलके तन लोचन सजल ।।
दो०-श्यामल केकी कंठ सम, तड़ित विनिन्दक बास ।
भूषन विविध विवाह के, पहिरे मंगल रास ।।
रघुवर वदन सदन सुषमा कौ । शारद ससिन उचित उपमाकौ
दृग विशाल नवकंज समाना । सब माधुर्य अलौकिक जाना ।।
भावत मनहिं बनत नहिं भाषा । पूरन करत दृष्टि अभिलाषा
विरद सुनावहिं वंश प्रसंसी । संग अनन्त कुँवर रघुवंशी ।।
चपल तुरंग नचावत जबहीं । आगे आन सुचाल दिखवहीं ।।

चढ़ेभानकुल मनिजेहि वाजा । तिहिगति देखि लजहिं खगराजा
सकल अंग शोभन सौं छयऊ। किधौं अनंग तुरंगम भयऊ ।।
वयगुन गतिन रूपकर मानौ। मोहन त्रिपुर मनोरथ ठानौ ।।

दो०-रतन विविध भूषनन में, लागैं जोंति अमंद ।
भावत जात लगाय को, ठगत अमर मुनि बृन्द ।।
आवत जानि वरात गृह, आनन्द मच्यो महान ।
सकल बराती रस छके, हिय अमित पुलकान ।।

सो०-जब मिथिलापति द्वार, आई अवध बरात वर ।
तिहिछन को सुखभान,बरणि पार किमि जायकवि ।

दो०-मिथिलाजन तिमि अवधजन, तिमि सुर सबै अपार ।
तिमि महि के वासी मनुज, प्रगटयो पारावार ।।

छ०-रानी सुनैना सहचरि, तंदुल दधि भरि थार ।
रामभाल टुकली दई, सुकुमार कौशलेश कुमार ।।
महामणिन के छत्र पुनि, राका ईन्दु आकार ।
पठवायो मिथिलेश के, चारि दुलह हित चार ।।
कौशल छत्र उतारि कै, मिथिला छत्र लगाय ।
मिथिला के परिकर चले, दुलह संग सुहाय ।।

कहहि परस्पर मुनिन समाजु । सम समधि देखे हम आजु ।।
दोउ नृप कीन्हे मुनिन प्रणामा । कहे कृपा तब पुरयो कामा ।।
मुनि अशीष दै वचन उचारे । भयो मनोरथ पूर्ण हमारे ।।
मिल्यो बहुरि दुलह मिथिलेस । जन्म जन्म कर मिटयो कलेस
भरत लखन रिपुशुदन काही । मिल्यो विदेह विदेह तहाँही ।।

दशरथ चरण परयो कुशकेतु। मिल्यो अंक भरि रघुकुलकेतु।
मिल्यो बहुरि पुनि चारउ भाइन। सोसुख एकमुख कहिजाइन
उभैय सस्वुर वन्दे जामाता। अम्बक प्रेम अंबु उम गाता॥
ताह वसिष्ठ दुलह एक ओरे। वैठाए आसन इक ठोरे॥
गौतम सतानन्द आदिक मुनि। बैठेजनक ओरदोउ विधि गुनि
विश्वामित्र वसींष्ठ उदारा। बैठे दुलह ढ़ीग गुनि अधिकारा।
लगी झरोखन में सुखसानी। दुलह देखि सुनैना रानी॥
सिद्धि नाम लक्ष्मीनिधि रमनी। जनक पुतहु छमा छबि छवनी
औरउ बृद्ध जनक कुल नारी। लखि दुलह तनमनधन वारी।
जो सुख भयो सुनैना काही। असको भाषिक कोविद नाही॥
मंजुल वाजन बाज अपारा। गाये इहि सुर नर मुनि दारा॥
दो०-जनक महल के द्वार को, चौक महा बिस्तार।
भरत भीर जस जस मनो, तस तन बढ़त अपार।

### बाह्य द्वार पर समधी से मिलना

जनक अवधपति आबत जाने। सानुज बढ़ि आगै सनमाने॥
गजते कर आलंव उतारे। मिले मनौ प्राननते प्यारे॥
दो०-वस्त्रन मणि भूषण सौं, राजा जनक उदार।
अविरल राज समाज सों समविधि किय सतकार।

### ॥ द्वार पूजा ॥

देखे राम बनै जब दूला। रोम हर्ष हुव मनअति फूला॥
इक कर सौं हय वाग समारे। इककर स्वर्ण मौर पर धारे॥
सतानन्द वय परम प्रवीना। प्रथम तिलक तुरंग परकीना॥

सानुज उतरि द्वार ढ़िग आये। गीत अनर्गल जुवतिन गाये ।।
सबके पिता जिनहिं श्रुति गावैं। तिनके पिता अनेक बनावैं ।।
समय विलोकि देखि सरलाई। मृदु मुस्क्याय चितय रघुराई।
ब्रह्म दारुमय पीठन पाहीं। बैठारे सुचि चौकन माहीं ।।
सतानन्द आचमन करावा। पढ़े संकल्प जिमि श्रुति गावा ।।

दो०-प्रमुदित राम नरेश ने, पूजे कलश गणेश।
हस्तारघाकर मौर सौं,जल छवायो मिथिलेश।

बस्तु विविध थारन मँह लीने। ठाढ़े सचिव उक्ति मनदीने ।।
पूजन जोग चाहियत जोई। देत विलंब करैं नहिं कोई ।।
त्रिभुवन तिलक रामके भाला। दीना निजकर तिलक भुवाला
हय गय वस्त्र विभूषण नाना। परम अमोलक रतन प्रधाना ।।
अस अगनित साहित्य ललामा। संकलपे बैठे तिहिं ठामा ।।
कनक खचित वर वसन बनाये। चित्रविचित्र रंग तिनभाये ।।
परिचर तहँ विदेह के ल्याये। डारि पाँवरे अतिसुख छाये ।।
गोपुर ते अन्तहपुर द्वारा। परी पौढ़ विस्तार अपारा ।।
जनकराज महिषी छविखानी। सजी सुवासिनि अति हरषानी
रचि आरती कनकमणि थारा। पठई जहाँ द्वार के चारा ।।
द्वार द्वार थल रचो बनाई। मोतिन माणिक चौक पुराई ।।
कनक कुँभ करि वदन स्वरुपा। आवाहन करि मंत्र अनूपा ।।
थापित करत माहँ तिहिं काला। भो प्रत्यक्ष गणनाथ विशाला
गौरि अवाहन किय सन्मानी। मुर्तिमंत भइ प्रगट भवानी ।।

दुलह दरस लालस मनमाहीं। समय समय सुर प्रगटतजाहीं॥
उभय और आसन अति पावन।धरे पुरोहित शुचि छविछावन
दो०-राजत भई मुनि मंडली, दुलह दरस अभिलाष।
द्वार चार करवावने, बैठे युत श्रुति साष॥
गौतम शतानन्द बड़ ज्ञानी। याज्ञवल्क्य आदिक मतिखानी।
उज्ज्वालित आरती अपारा। लीन्हें पाणि पुरट के थारा॥
खड़ी सुवासिनि किये कतारा। कनक कुम्भ शिर सजे अपारा।
भई भूमि थिर मनहुँ दामिनी। गावहिं मंगल गीत भामिनी॥
सचिव सुदामन जनक पठायो। लक्ष्मीनिधि कहँ वचन सुनायो
महाराज अस दियो निदेशा। ल्यावहिं सुतन सहित अवधेशा
रहै चौक महँ खड़ी बराता। आवहिं रघुकुल बृद्ध विज्ञाता॥
राम सखा सब संग सिधारे। देखैं दुलह द्वारन विधि चारे॥
सचिव सकल मिथिलेशनिदेशा। राजकुंमरन सो कह्यो अशेशा
जनककुंवर दशरथ पद बन्दी।पितु रजाय सब कह्यो अनन्दी।
सुनि कौशलपति अति सुख पायो। तुरंगन ते कुवरन उतरायो
चारि सुखासन वरन चढ़ायो। सखा और कुल बृद्ध बुलायो॥
भये पालकिन राउ सवारा। शोभा निरखि धनद हियहारा।
दो०-सब तुरंग मातंग रथ, ओरहुँ सकल बरात।
खड़ी करायो चौक महँ, बाजत बाजन ब्रात॥
परत पावड़े वसन अनूपा। करि आगे दूलह सुख रुपा॥
राम भरत लक्ष्मन रिपुशाला। तिन पाछे दशरथ महिपाला।
चल्यो द्वार को चार करावन। जनु विधि लोकपाल युतपावन

चढ़ी अटा अंतहपुर नारी । लखि दूलह छवि तन मनवारी ॥
उतै जनक इत दशरथ राऊ । रतन लुटायन लहत अघाऊ ॥
जे लूटहिं जन तेउ लुटावैं । हर्ष विवश नहि धनमन लावैं ॥
दशरथ तुरत सुमन्त बुलाये । सादर सुखद निदेश सुनाये ॥
रघुकुल गुरु कौशिक मुनिराई । दोउ आनहु पालकी चढ़ाई ॥
यहि विधि अंतहपुर के द्वारे । लै दूलह नरनाथ पधारे ॥
सतानन्द तहँ अवसर जानी । बुलवायो जनकहिं मुदमानी ॥
तहँ आरती उतारन काजा । सजि सुवासिनी सजी समाजा ॥
तिनमधि तियनको रूप वनायो । शची गिरागिरिजा सुखछायो
तेउ आरती उतारन आई । और देवदारा मन भाई ॥
लै दूलह जब अवध महीपा । द्वारचार की चौक समीपा ॥
आयो मुनिमंडल लै भारी । तब वशिष्ठ अस गिरा उचारी।
धरहु सुखासन वरन उतारी । अवधनाथ आपहूँ पधारी ॥
असकहि पढ़न लग्यो स्वस्तियाना । उतरि भूप युत कुँवरसचैना
चौक समीप कुँवर करि आगे । ठाढ़े भये भूप अनुरागे ॥
तहाँसुवासिनि परमहुलासिनी।सजी सकलमिथिलापुरबासिनी
तोरहिं तृण लखि दूलह अनूपा । भाग्य सराहत दशरथ भूपा ।

दो०-ते उतारती आरती, सलिल डारती भूमि ।
नयननि पलक निवारती,लेती मनु मुख चूमि ।

उत आयो मिथिला को राजा । इत सुत युत कौशल महाराजा
मिले बरोबर भूपति दोऊ । जय जयकार किये सब कोऊ ॥
कहहिं परस्पर मुनिन समाजू । सम समधी देखे हम आजू ॥

दोउ नृप कीन्हें मुनिन प्रणामा । कह्यो कृपा तब पूरयोकामा ।
मुनि आशिष दै बचन उचारे । भये मनोरथ पूर्ण हमारे ।।
मिल्यो बहुरि दूलह मिथिलेशा । जन्मजन्मकर मिटयो कलेशा
भरत लषण रिपुसून काहीं । मिल्यो विदेह विदेह तहाँही ।।
दशरथ चरण परयो कुशकेतू । मिल्यो अंक भरि रघुकुल केतू
मिल्यो बहुरि पुनि चारिउ भाइन। सो सुख इकमुख कहीजाइन
उभै श्वसुर बन्दे जमाता । अम्बक प्रेम अंबु उमगाता ।।
तहँ वशिष्ठ दुलह एक ओरे । बैठाये आसन इक ठोरे ।।
दो०-शीर ध्वज निमिकुल कमल, कुशध्वज ताको भ्रात ।
भवन और बैठत भये, इक आसन अवदात ।।
गौतम शतानन्द आदिकमुनि । बैठे जनक ओर दोउविधि गुनि
विश्वामित्र बशिष्ठ उदारा । बैठे दुलह ढिग गुणि अधिकारा
लगी झरोखन में सुवासीन । दूलह देखि सुनैना रानी ।।
सिद्धि नाम लक्ष्मीनिधि रमनी । पुतहु छमा छमि छमनी ।।
औरहुँ बृद्ध जनककुल नारी । लखि दूलह तन मनधन वारी ।
जो सुख भयो सुनैना काहीं । सकै भाषि कविकोविद नाहीं ।।
मंजुल बाजन बजत अपारा । गाय रहीं सुर नर मुनि दारा ।।
लाग्यो होन द्वार कर चारा । कियो वेद विधि मुनिनउचारा
पुजन भयो जौन तिहि देशू । लिये प्रत्यक्ष ह्वै गौरि गणेशू ।।
करवायो मुनि वेद विधाना । माने आपन भाग्य महाना ।।
वेनु थम्भ पूजयो भगवाना । जनु निमिकुल यशध्वज फहराना।
तेहि अवसर लक्ष्मीनिधि आयो । सारा जोरी चार करायो ।

दशरथ जनक समेत समाजू । को वरनैं जस मोदिक आजू ।।
शतानन्द तब बचन उचारा । सुनु वशिष्ठ गुरु गाधि कुमारा
आयो अब लगनहुँ कर काला । मण्डप तर वर चलहिं उताला

।। मण्डप में चारों भाई समाज चलना ।।

रंगनाथ पद पंकज ध्याई । उठयो अनन्दित कोशल राई ।।
शतानन्द गुरु गाधि कुमारा । करि आगे मुनि और उदारा ।
पुनि आगे करि दूलह चारी । अन्तपुर कहँ चल्यो सुखारी ।
परत पाँवड़े वसन नवीना । पढ़हिं वेद मुनि बृन्द प्रवीना ।।
राम ब्याह गावहिं सब नारी । देहिं सुवासिनि आर्घ्य सुखारी
कक्ष तीनि बीभूति अपारा । निरखत हरषत अवध भुवारा ।
गये खाश रनिवास दुवारा । जहँ ते नहिं पुनि पुरुष प्रचारा
दो०-धवल धाम ध्रुव धामइव, चामीकर के चारु ।
हिमगिरि मन्दर मेरू जिन, जोहत मानत हारु ।।
चौक चन्द्र शाला छविमाला । रजत कनक की बनी दिवाला ।
चित्रविचित्र और सवशाला । लखि ललचत अमरावति पाला
राम निरखि स्वसुर विभूति । मनमहँ गुनी सीय करतूती ।।
निरखि बिदेह विभव अवधेशा । मनमहँ करत अमित अँदेशा
धौं सुरपुर इव शक्र बसायो । ब्रह्म सदन धौं इत चलि आयो ।
किधौं विदेह भक्ति जियजानी । हरिहर पुरी आय निरमानी ।
निज तप बल यह विभव अपारा । लह्यो विदेह दीन करतार ।
यहि विधि देखत सुख अवगाहत । दशरथ बारहिं बार सराहत
गये डयोढ़ी अंतहपुर केरी । सजि नारी तहँ खड़ी घनेरी ।।

तहँ निवास पौर अधिकारी । जोरि पाणिजय जीव उचारी।

दो०-लीन्ह परिकरन करनते, चमर छत्र बहु नारि ।
चली चलावती चाय भरि, करि दूलह बलिहारि ।

श्री सुनैना जी चारों भाई की परिछन आरती

छ०-सिय मातु घोलति प्रेमरस,अतिचाव सरसत मनभली।
लिये बोलि गोतनिन साज सजि प्रिय हेतु परिछन मंगली।
बहु गान मंगल हर्षि हियपुर नारि गावहिं स्वर रसे।
सुनि ध्यान त्यागत योगरत मुनि हर्षि देखि दूलह फँसे ॥

दो०-मंगल साज सम्हारि शुभ, आरति सहस सजाय ।
चली मातु परिछन करन, राम वरहिं हरषाय ॥

गावत मंगल मंगल हेता । सोह रानि सब सखिन समेता ॥
पहिरे अनुपम भूषण चीरा । मोहहिं रतिहिं सुसोह शरीरा ॥
कंकन किंकिन नूपुर बाजै । मनहुँ सामगति सरस सुभ्राजै ॥
दुलहा भाव भरी वर नारी । जात चली परिछन हित सारी।
औरहिं सुरतिय छदम सुवेषी । बनी नारि सब सुभग विशेषी।
जाइ मिली रनिबासहिं सोही । बिन पहिचान सुनैना मोहीं ॥
देखत मगन भई सब नारी । पाइ नयन फल देह विसारी ॥
अनुपम दुलह मनोहर देखी । गति चकोर भई चंदहिं देखी ॥
नखशिख निरखि बनाकी शोभा ।मनमतिनयन सवनकरलोभा

दो०-मातु सुनैनहिं सुख भयो, मन बानी से पार ।
दुलह मनोहर भेष लखि, भरी हिये रसधार ।

मुदित मातु हरषहिं मनहिं, प्रेम न हृदय समाय ।
परिछन कर लखि लखि वरहिं, भाव उमंगहिं गाय।

परिछन समय नगर अरु व्योमा । बाजत बाद्य महासुख भोगा
मंगल गान होय चहुँ ओरा । सुख उमड़त आनन्द चहूँ ओरा
शान्ति पाठ बोलहिं द्विजराई । चलत मंद मनहर सुख छाई ।।
छहरत छटा चुअत जनुभूमी । भरि प्रकाश मंडप रसझूमी ।।
यहि प्रकार रघुवर रस पागे । आये मंडप लखहिं सुभोगे ।।
सुभग सुआसन बनेउ विवाहा । बरहिं बैठायो देय उमाहा ।।
बरषहि सुमन करत जयवानी । हरषि पुलक मनमोद महानी।
ल्याइ गई भीतर गहिहाथा । चारों कुँवर लये तिन साथा ।।
मंडप महँ करि आदर भारे । उचित आसनन पर बैठारे ।।

दो०-आरति करि रघुलाल की, अमित निछावर कीन्ह ।
नाऊ बारी भाट नट, महा मुदित मन लीन्ह ।।

।। समधी समधी मिलन अंतह पुर में ।।

समय समुझि शुभनिरहुतभूपा । मिले दशरथहिं प्रेमअनूपा ।।
शारद शेष गणेश विचारैं । खोजत उपमा कतहुँ न पारैं ।।
इन सम सरस न तीनहुँ काला । पुनिपुनि कहैं सुबुद्धि बिशाला
सह त्रिदेव सुर कहहिं परस्पर । ब्याह बिलोक लखे बहु घरघर
सुर नर असुर नाग मुनि केरा । देखे नहिं अस मिलन सुवेला
सबहिं भाँति सम दूनहुँ भूपा । सुतवित नारी गुण अनुरूपा ।।

दो०-आजहिं सम समधी लखे, भयो न आगे होन ।
रंचक घट इक एक नहिं, सब प्रकार सुख भौन ।।

नृप प्रशंसि सुर बरषहिं फूला । समधी देखि मगन मन भूला ।
प्रीति प्रशंसा सह सुरनी । दुहुँ समाज सुनि मोद महानी ।।
गुरु वशिष्ठ कौशिक पद माथा । नाये नृपति द्विजन द्रग पाथा
वस्त्र अनुपम पाँवड़ डारी । भूप मुनिहिं लै चलेव सुखारी ।।
मंडप देखि भूप अनुरागे । अकथ अलौकिक रसमहँ पागे ।।
जनक सप्रेम सुआसन दीन्हा । तेज पुँज पेखत मन लीन्हा ।।
सोह भूप सब रिषिन समेते । द्विज समाज नृप मंत्रिन जेते ।।
राम सखा सब लहि सतकारा । सोहैं आसन हर्ष अपारा ।।

दो०-वामदेव आदिक रिषय, पुजे मुदित महिस ।
दिए दिव्य आसन सबहि, सब सन लहि असीस

पुजे भुपति सकल बराती । समधी समसादर सन भांती ।।
आसन उचित दिय सब काहु । कहिकाह सुख एक उछाहु ।।
सकल बरात जनक सनमानी । दान मान विनती बरवानी ।।
विधि हरिहर दिसि पति दिनराऊ। जे जानहि रघुवीर प्रभाऊ
कपट विप्र वर वेष बनाए । कौतुक देखहि अति सचु पाए ।।
पूजे जनक देव समजाने । दिए सुआसन विनु पहिचाने ।।
दो०-रामचन्द मुखचन्द्र छबि, लोचन चारु चकोर ।
करत पान सादर सकल, प्रेम प्रमोद न थोर ।।

।। श्रीजनकजी दुलहा के पुजन करना ।।

दो०-पदेउ स्वस्तिक बचन द्विजन गणेश पुजाई ।
बुलवाये दुलह तहाँ क्रम सो अरध दिवाई ।।